सामाजिक वरण की संभावना
नोबेल लेक्चर,

8 दिसम्बर, 1998

अमर्त्य सेन द्वारा*

ट्रिनिटी कालेज, केम्ब्रिज, सीबी 2 आई टी क्यू, ग्रेट ब्रिटेन

यह कहा गया है कि ''एक ऊंट एक घौड़ा है जो एक समिति द्वारा अभिकल्पित किया गया है। यह भाायद समिति के निर्णयों में गम्भीर त्रुटियों का एक प्रभावकारी उदाहरण है लेकिन वास्तव में यह बहुत ही नर्म अभ्यारोपण है। किसी ऊंट की रफ़्तार घोड़े जैसी नहीं हो सकती लेकिन यह बहुत ही उपयोगी और सुसंगत प्राणी है जो पानी और खुराक के बिना लंबी दूरियों को तय करने के लिए अच्छी तरह से समन्वित है। कोई समिति जो एक घोड़े को डिज़ाइन करने में अपने विभिन्न सदस्यों की विभिन्न इच्छाओं को परावर्तित करने की चेष्टा करती हैं वह संगत से कुछ बहुत कम पर बहुत आसानी से इसे समाप्त करती हैं; भाायद यूनानी पौराणिक कथाओं का एक किन्नर, आधा घोड़ा और आधा कुछ और कुछ ओर–एक अस्थिर उत्पति जो क्रूरता के साथ गड़बड़ी को लिए हुए हैं।

एक छोटी समिति के सामने जो कठिनाई आती है, वह केवल अधिक बड़ी हो सकती है जब इस पर कोई ब्रहदाकार समिति ''लोगों की, लोगो द्वारा लोगों के लिए'' पसन्दों को परावर्तित करते हुए निर्णय लेती है। मोटे तौर पर बात करते हुए वह ''सामाजिक पसन्द'' का विषय है और इसके विभाल ढांचे के भीतर विभिन्न समस्यायें भामिल है जिनका साझा तत्व यह है कि सामाजिक निर्णयों और समूह निर्णयों को उन व्यक्तियों के विचारों और हितों से सम्बद्ध किया जाता है जो समाज या समूह को बनाते हैं। यदि कोई केन्द्रीय पभन है जिसे प्रेरक विषय के रूप में देखा जा सकता है जो सामाजिक पसन्द सिद्धांत को प्रेरित करता है तो वह यही हैः समाज के भीतर विभिन्न व्यक्तियों की पसन्दों, चिन्ताओं और स्थितियों में विभिन्नता होते हुए (उदाहरणार्थ ''सामाजिक कल्याण'' या ''सार्वजनिक हित'' के बारे में) समाज के बारे में अकाटय सामूहक निर्णयों पर पहुंचना कैसे संभव हो सकता है? ऐसे सामूहिक निर्णय लेने के लिए कोई संगत आधार कैसे प्राप्त कर सकते हैं जैसा कि ''समाज इस पर उसको तरजीह देता है'' या ''समाज को इस पर उसको चुनना चाहिए'' या सामाजिक रूप से यह सही है''? क्या उपयुक्त सामाजिक पसन्द कभी संभव है चूंकि, जैसा कि होरेस ने बहुत समय पहले देखा था कि ''जितने लोग उतनी ही पसन्दें होती है''?

1. सामाजिक सिद्धांत

इस लैक्चर में मैं कुछ चुनौतियों और बुनियादी समस्याओं के बारे में चर्चा करने की कोभिाभा करूंगा जिनका एक विद्या ाखा के रूप में सामाजिक वरण सिद्धांत को सामना करना पड़ता है।[1] तथापि, इस लैक्चर के लिए तत्काल अवसर एक पुरस्कार है और मैं जानता हूँ कि मुझ से प्रत्याभाा की जाती है कि इस अवसर से संबंधित अपनी रचना पर एक या दूसरे रूप में चर्चा करूँ (चाहे अन्यथा वह प्रयास कितना घृष्ट होता) मैं ऐसा करने की कोभिाभा करूंगा लेकिन, मेरा विभवास है, कि यह एक प्रभांसनीय अवसर भी है कि एक विद्याभााखा के रूप में

---

* अमर्त्य सेन द्वारा इस लेख को अमेरिकन इकोनॉमिक रिव्यि, 89 (जुलाई 1999) में भी प्रकाि ात किया गया है। उपयोगी टिप्पिणियों और सुझावों के लिए मैं सुधीर आनन्द, केनिथ ऐरो, टोनी एटकन्सिन, एमा रोथचाइल्ड, औरे कोटारो सुजूमूरा के प्रति आभारी हूँ। एमिया बागची, प्रणाब वर्धन, कौि ाक बालू, आनगसडीटन, रजत देब, जीनडरेज़, भास्कर दत्ता, जीन पाल फ़ीटौसी, जेम्स फ़ोस्टर, सिद्दीकी ओसमानी, प्रशान्त पटनायक और टोनी भोरोंक के साथ परिचर्चाओं से भी मैं लाभान्वित हुआ हूँ।

1 स्पष्टता यह सामाजिक पसन्द सिद्धांत का सर्वेक्षण नहीं है और संबंधित साहित्य की बारीक जांच करने का प्रयास नहीं किया गया है। वितंग दृष्टि अवलोकन ऐलन एम फेल्डमेन (1980), प्रसान्त पटनायक और मौरीस सैलेस (1983) कोटारो सूजूम्यूरा (1983) पीटर हैम्संड (1985) जान इलेस्टर और आनुंद हाइलैंड (1986) सेन (1986) डेविड स्टारेट (1988) डेनिस म्यूलर (1989) केनिथ जे ऐरो (1997) में किया जा सकता है।

सामाजिक वरण–इसकी अर्न्तवस्तु सुसंगति और पहुंच–के बारे में कुछ सामान्य प्रभनों को भी लिया जाए, और मैं इस अवसर से लाभ उठाना चाहता हूँ। रायल स्वीडिभा अकादमी आफ साइंसिस ने मेरे कार्य के सामान्य क्षेत्र का, जिस के लिए मुझे पुरस्कार दिया गया है, ''कल्याण अर्थभाास्त्र'' के रूप में उल्लेख किया है और तीन विभोष क्षेत्रोंः सामाजिक पसन्द, वितरण और गरीबी को अलग किया। जबकि मैं वास्तव में विभिन्न तरीकों से इन भिन्न विषयों के साथ व्यस्त रहा हूँ लेकिन यह सामाजिक पसन्द सिद्धांत है, जिसे अपने आधुनिक रूप में अग्रगामी तरीके से ऐरो (1951)[2] द्वारा प्रतिपादित किया गया था जो वैकल्पिक सामाजिक संभावनाओं (साथ ही साथ सामाजिक कल्याण, असमानता और ग़रीबी के मूल्यांकन सहित) के मूल्यांकन और पसन्द के बारे में सामान्य पहुंच उपलब्ध होती है। इसे मैं पर्याप्त कारण मानता हूँ कि इस नोबेल लैक्चर में मुख्यतः सामाजिक सिद्धांत पर ध्यान केन्द्रित करूँ।

समाजिक वरण सिद्धांत एक बहुत व्यापाक विद्याभााखा है जिसमें विभिन्न प्रकार के सुस्पष्ट प्रभनों को लिया गया है और इस विषय के कुछ उदाहरणों के रूप में कुछ समस्याओं का उल्लेख करना लाभदायक होगा (जिन पर काम करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ है)। बहुसंख्या का भासन कब स्पष्ट और संगत निर्णय लेगा? हम किस अनुमान लगा सकते हैं कि समाज समग्र रूप से किस प्रकार काम कर रहा है जबकि इसके विभिन्न सदस्यों के हित पृथक–पृथक हैं? समाज के बनाने वाले विभिन्न लोगों की विभिन्न स्थितियों और कष्टों को ध्यान में रखते हुए उनके अधिकारों और आजादी का कैसे ख्याल रख सकते है? हम सार्वजनिक भलाई जैसा कि नैसर्गिक पर्यावरण और ज्ञान भास्त्र सुरक्षा का सामाजिक मूल्यांकन कैसे करते है? इसके अलावा, कुछ जांचों की, जो सामाजिक वरण सिद्धांत का प्रत्यक्ष रूप से भाग नहीं है, सहायता, सामूहिक निर्णयों के अध्ययन द्वारा उत्पन्न समझदारी द्वारा की गई है (जैसा कि अकालों और भूख की उत्पति तथा रोकथाम या लिंग असमानता के रूप और परिणाम या व्यक्तिगत आजादी की मांगें जिन्हें ''सामाजिक वचनबद्धता'' के रूप में देखा जाता है)। वास्तव में सामाजिक वरण सिद्धांत की पहुंच और सुसंगति बहुत व्यापक है।

II सामाजिक वरण सिद्धांत और रचनात्मक निराशावाद का आरंभ

सामाजिक सिद्धांत का विषय कैसे आरंभ हुआ? विभिन्न हितों और चिन्ताओं को लिए हुए सामाजिक निर्णयों की चुनौतियों की छानबीन लंबे समय से की गई है। उदाहरणार्थ, प्राचीन ग्रीस में अरस्तू और प्राचीन भारत में कौटिल्या दोनों चौथी भाताब्दी बीसी में रहते थे। उन्होनें अपनी पालिटिक्स और इकानोमिक्स[3] नामक पुस्तकों में सामाजिक वरण में विभिन्न रचनात्मक संभावनाओं की खोज की है।

तथापि सामाजिक वरण सिद्धांत एक भावनाबद्ध विद्याभााखा के रूप में फ्रांसीसी क्रांति के आसपास अस्तित्व में आया। अठारहवीं भाताब्दी के उत्तरार्ध यह विषय फ्रांसीसी गणितज्ञों जैसे जे. सी. बोर्डा (1781) और मारक्वीस डी कंडोरसेट (1785) द्वारा पथप्रदर्शित किया गया था जिन्होंने इन समस्याओं को गणितीय भाब्दावली में हल किया और जिन्होनें वोटिंग और संबंधित कार्यपद्धतियों के रूप में सामाजिक वरण की औपचारिक विद्याभााखा आरंभ की। इस अवधि की बौद्धिक वातावरण को यूरोपीय ज्ञान ने बहुत प्रभावित किया, और इसका हित सामाजिक व्यवस्था का सुविवेचित निर्माण करना था। असल में, कुछ पूर्व सामाजिक वरण सिद्धांतवादी, जिनमें सबसे प्रसिद्ध कैडोरसेट था, फ्रांसीसी क्रांति के बौद्धिक नेताओं में से थे।

तथापि, फ्रांसीसी क्रांति ने फ्रांस में भाांतिपूर्ण सामाजिक व्यवस्था स्थापित नहीं की। सारे विश्व में राजनीतिक एजेन्ड़ा बदल देने में भारी उपलब्धियों के के बावजूद, फ्रांस में इसने न

---

2 ऐरो (1950, 1951, 1963 भी देखें)

3 ''अर्थभाास्त्र'' संस्कृत भाब्द (कौटलिया की पुस्तक का भीर्षक, का ''इकानौमिक्स'' के रूप में अनुवाद किया गया है चाहे बहुत सा स्थान एक झगड़ालू समाज में नीति की मांगों की जांच को दिया गया है। अरस्तू के पालिटिक्स और कौटल्या के अर्थभाास्त्र का अंग्रेजी अनुवाद ई बारकर (1958) और एल रंगाराजन (1987) में पाया जा सकता है। इन विषयों पर रूचिकर मध्यवर्ती यूरोपीय रचनाओं के लिए देखे, उदाहरणार्थ आयन मैक्लीन (1990)।

केवल बहुत संघर्ष और खूनख़राबा उत्पन्न किया, बल्कि यह उसे बहुधा कहे गए, जो सही नहीं, ''आतंक के भाासन'' की ओर ले गया। वास्तव में, सामाजिक तालमेल के बहुत से सिद्धांतवादी, जिन्होंने क्रांति के पीछे विचारों का योगदान दिया वे झगड़े की आग में नष्ट हो गए जो क्रांति ने स्वयं ही प्रवर्तित की थी (इसमें कंडोसेर भी शामिल था जिसने स्वयं प्राणान्त कर लिया जब यह बिल्कुल संभावना थी कि अन्य ऐसा कर देंगे)। सामाजिक वरण की समस्याओं ने, जिनका समाधान सिद्धांत और विभलेषण के स्तर पर किया जा रहा था, इस मामले में भाांतिपूर्ण बौद्धिक क्रांति के लिए प्रतीक्षा नहीं की।

पूर्वकालीन सामाजिक वरण सिद्धांत वादियों को जिस प्रेरणा ने प्रभावित किया उसमे सामाजिक वरण के लिए व्यवस्थाओं में अस्थिरता और निरंकुभाता दोनों से दूर रहना था। उनके कार्य की इच्छाएं एक समूह के लिए युक्तियुक्त और प्रजातांत्रिक निर्णयों के लिए ढांचे के विकास पर केन्द्रित थी, और अपने सभी सदस्यों की पसन्दों और हितों पर भी पूरा ध्यान दिया गया। तथापि सैद्धांतिक जांचों से भी विभिाष्ट रूप से कुछ हद तक निराभाावादी परिणाम ही दिए। उदाहरणार्थ, उन्होंने उल्लेख किया कि बहुमत का भाासन पूरी तरह से असंगत हो सकता है, बहुमत के बल पर ख को परजित करता है और ख बहुमत द्वारा ग को पराजित करता है और आगे चलकर ग बहुसंख्या के कारण ही क को पराजित करता है।[4]

उन्नीसवीं भाताब्दी में यूरोप बहुत खोज़ कार्य होता रहा (पुनः उसके परिणाम निराभाजनक थे) वास्तव में कुछ बहुत ही सर्जनात्मक लोगों ने इस क्षेत्र में काम किया और सामाजिक वरण की कठिनाइयों के साथ जूझते रहे, इसमें लीवीस कैरोल भी भामिल था, एलिस इन वंडरलैंड का लेखक भामिल था (अपने वास्तविक नाम सीएल डाजसन 1874, 1884)।

जब बीसवीं भमें सामाजिक वरण का विषय ऐरो (1951) द्वारा पुनर्जीवित किया गया तो वह भी समूह के निर्णयों की कठिनाइयों और असंगतियों के बारे में बहुत चिन्तित था। जबकि ऐरो सामाजिक वरण की विद्याभााखा को निर्मित और स्वयंसिद्ध ढांचे में डाला (जिससे आधुनिक रूप में सामाजिक वरण सिद्धांत का जन्म हुआ), उसने पहले से व्याप्त अन्धेरे को सर्वव्यापी पहुंच के परिणाम–और स्पष्टतः निराभाावादी को स्थापित करके और भी गहरा कर दिया।

ऐरो (1950, 1951, 1963) ''असंभवता प्रमेय'' (पूर्व ''सामान्य संभवता प्रमेय'') विस्मयकारी चारूता और भाक्ति का परिणाम है जिसमें दिखाया कि एक बड़ें परिवार के भीतर बुद्धिमत्ता पूर्ण कुछ बहुत नर्म भार्ते किसी सामाजिक वरण पद्धति द्वारा एक साथ सन्तुष्ट नहीं की जा सकती। केवल तानाभााही ही असंगतियों को दूर कर सकती है लेकिन बेभाक उसमें भामिल होगा (1) राजनीति में भागीदारी निर्णयों की एक आत्यंतिक कुरबानी; और (2) कल्याण अर्थभास्त्र में, नानाविद आबादी में विभिन्न हितों के प्रति संवेदनभील बनने की गहन अक्षमता। सामाजिक संगति के इच्छा के फलने फूलने के दो भाताब्दी बाद फ्रांसीसी क्रांति के सिद्धांतवादियों के लेखों और प्रबोध सोच में विषय अनिवार्यतः समाप्त हो गया। सामाजिक मूल्यांकन, कल्याण आर्थिक परिकलन और मूल्यांकन सांख्यिकी, ऐसा लगा कि, अनिवार्यतः मनमानी या अनुपचारी रूप से निरंकुभा होनी चाहिए।

ऐरो की ''असंभवत प्रमेय'' ने तत्काल और तीवर दिलचस्पी जगा दी (और इसकी अनुक्रिया में भारी साहित्य का निर्माण हुआ जिसमें बहुत से असंभावना परिणाम भामिल थे विषय में एक गहरी मेद्यता की भी इसने पहचान की जो ऐरो के अव्यधिक महत्वपूर्ण ''रचनात्मक'' योजनाबद्ध सामाजिक वरण सिद्धांत, जो वास्तव में काम कर सके के [5] प्रोग्राम पर छा गया।

---

4 देखें कैडोरसेट (1785), इन विभलेषणों पर बहुत सी टीकाएं है, ऐरास (1951) डनकन ब्लैक (1958), विलियम वी गेहरलीन (1985) एच पेयटन यंग (1988) और मैक्लीन 1990। बहुमत वोटिंग में असंगत की संभावित व्यापकता पर देखें रिचर्ड डी मेककेलवे (1979) और नार्मन जे स्भाोफील्ड (1983)।

5 स्वयं सिद्ध ढांचें में विभिन्नता लाते हुए,, संबंधित असंभावना परणिाम भी प्राप्त किया जा सकता है। उदाहरण ऐरो में मिल सकते हैं (1950, 1951, 1952, 1963), जूलियन ब्लू (1957, 1972, 1979) बेंगट हेंसन (1969 क, ख, 1976), तपस मजुमदार (1969–1973), सेन (1969, 1970, 1986, 1993, 1995) पट्टनायक (1971, 1973, 1978) एन्डरीयू मेस कोलेल और हयूगो सोनेनसभीन (1972), थमस स्भावर्टज (1972, 1986), पीटर फिभाबर्न (1973, 1974) ऐलन जिबर्ड (1973), डोनल्ड ब्राउन (1974, 1975), केन बिनमोर (1975, 1994), सेलेस (1975), मार्क स्टरेथवेट (1975), राबर्ट विल्सन (1975), रजत देब (1976–

समाजिक वरण कठिनाइयों कल्याण अर्थभाास्त्र या अत्यधिक प्रयुक्त की जाती है। 1960 के दभाक के मध्य में बिलियम बाउमोल ने उचित कहा कि ''कल्याण अर्थभाास्त्र के महत्व के बारे में कथनों ''का'' मृत्यु सूचनाओं से बिना सोचे सदृभा होने लगा है'' (पृष्ठ)। यह निभिचत रूप से व्याप्त विचारों का सही पठन था लेकिन जैसा कि बाऊमोल ने स्वयं कहा कि हमें मूल्यांकन करने चाहिए कि ये विचार कितने ठीक थे। हमें विभोष रूप से पूछना चाहिए कि सामाजिक वरण सिद्धांत में ऐरोवियन ढांचे के साथ सम्बद्ध निराभाजनक को क्या एक विद्याभााखा के रूप में कल्याण अर्थभाास्त्र के लिए हानिकारक माना जाना चाहिए।

जैसा कि होता है, परम्परागत कल्याण अर्थभाास्त्र जिसे उपयोगी अर्थभाास्त्रीयों (जैसा कि फ्रांसिस टी. एजवर्थ, 1881; अलफरेड मार्भाल, 1890 आर्थर सी पीगू (1920) ने वोट अभिमुख सामाजिक वरण सिद्धांत से बहुत भिन्न मार्ग लिया है। इसने प्रेरणा बोर्डा (1781) या केडोरसेट (1785) से नहीं बल्कि अपने समकालीन जर्मी बैंथम (1789) से ली। बैंथम ने सामाजिक हितों के बारे में निर्णय प्राप्त करने के लिए उपयोगी कैल्कूलस के प्रयोग आरंभ किया और इसके लिए विभिन्न व्यक्तियों के व्यक्तिगत हितों का समूहन उनकी अपनी अपनी उपयोगिताओं के रूप में किया।

बेंथम की चिन्ता– सामान्य रूप से एक समुदाय की कुल उपयोगिता के साथ थी। यह उस कुल योग के वितरण के बावजूद थी और इसमें पर्याप्त नैतिक और राजनीतिक महत्व की एक सूचनात्मक सीम थी। उदाहरणार्थ, जो बहुत अभागा है कि आय से उपयोगिता और मनोरंजन उत्पन्न करने की एक समान कम क्षमता रखता (मान लें किसी बाधा के कारण) तो उसे भी उपयोगता आदर्भा विभव में दत्त योग का एक निम्नतर भाग दिया जाएगा। यह उपयोगिताओं के कुल योग को अधिकतम सीमा तक ले जाने के एक निष्ठ प्रयास का परिणाम है। (इस संकेन्द्रित प्राथमिकता के विचित्र परिणाम पर देखें सेन 1970, 1973, जान रॉल, 1971; क्लाडडी एस्परीमेंट और लूईस जेवर्स, 1977)। तथापि, विभिन्न लोगों के लाभों और हानियों की तुलनात्मक नोट लेने में उपयोगिता रूचि अपने आप में मामूली महत्व का नहीं है। और इस महत्व के कारण उपयोगिता कल्याण अर्थभाास्त्र सूचना की श्रेणी का प्रयोग करने में गहरी दिलचस्पी लेता है – जो विभिन्न व्यक्तियों के उपयोगिता लाभ और हानियों की तुलना के रूप में हैं – जिसमें कैडोरसेट और बोरडा सीधे भाामिल नहीं थे।

कल्याण अर्थभाास्त्र को आकार देने में उपयोगितावाद बहुत प्रभावभााली रही है, जो बहुत समय तक उपयोगिता कैलकूलस के प्रति लगया संदेहरहित निष्ठा द्वारा छायी हुई थी। लेकिन 1930 के दभाक तक उपयोगिता कल्याण अर्थभाास्त्र की कटु आलोचना हुई। प्रभन उठाना बहुत स्वाभाविक होता है (जैसा कि राउल, 1971, ने न्यान के सिद्धांत को प्रतिपादन कौशलपूर्वक ढंग से किया), वितरणीय मामलों की उपयोगिता उपेक्षा और इसका संकेन्द्रण केवल उपयोगिता कुल योगों पर वितरण – धन्धे के तरीके से था। लेकिन वह दिभाा नहीं थी जिसकी और गैर उपयोगिता आलोचक 1938 के दभाक में और बाद के दभाकों में गए। बल्कि अर्थभाास्त्री लायनेल रॉबिन्स और अन्य (जो ''तर्कयुक्त प्रत्यक्षवादी'' द ार्शन से बहुत प्रभावित थे) द्वारा प्रस्तुत दलीलों द्वारा प्रेरित हुए कि उपयोगिता के अन्तर व्यक्तिगत तुलनाओं का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है:' प्रत्येक का मन दूसरे के मन के लिए रहस्यमय होता है और भावनाओं का कोई साझा हर संभव नहीं होता'' (रॉबिन्स 1938 पृ0 636) । इस प्रकार उपयोगिता कल्याण अर्थ ाास्त्र की ज्ञानीय बुनियादों को असाध्य सदो ा पाया गया।

सो ाल राज्यों के विभिन्न व्यक्तियों के अपने अपने आर्डिंग के आधार पर कल्याण अर्थ ाास्त्र करने के लिए निम्नलिखित प्रयास उपयोगिता लाभ या हानियों अन्तः व्यक्तिगत तुलनाएं करने (बे ाक न ही विभिन्न व्यक्तियों की कुल उपयोगिताओं किसी तुलना जिनकी भी

1977), सूजूमूरा (1976, 1983), ब्लाऊ और देब (1977), जैरी केली (1978, 1987), डौगलस एच ब्लेयर और राबर्ट पोलक (1979, 1982), जीन जैक्वीस लैफोनट (1979), भास्कर दत्ता (1980), ग्रेशिया चीचीलनस्की (1982), डेविड एम ग्रेथर और चार्ल्स प्लाट (1982), चीचीलनस्की और जेफ़री हील (1983), हरवेमाउलिन (1983), पट्टनायक और सेलीस (1983), डेविड केलसी (1984), बेज़ालेल पेलेग (1984), हैम्मण्ड (1987, 1997), मार्कए एजरमैन और फ़ाऊद टी अलेस्करो (1986), स्शोफ़ील्ड (1996), ओर अलेस्केरो (1997), और मैनं बहुत से योगदान करने वालों में।

उपयोगिता कल्याण अर्थ ाास्त्र द्वारा उपेक्षा की जाती है) के बिना किए गए। जबकि विभिन्न व्यक्तियों के बीच उपयोगिताओं के वितरण के प्रति उपयोगितावाद और उपयोगिता कल्याण अर्थ ाास्त्र बिल्कुल उदासीन है (वे उपयोगिताओं के कुल योग पर ही संकेन्द्रित होते है) किसी भी रूप में किसी अन्तः वैयक्तिक तुलनाओं के बिना नई सामाजिक व्यवस्था ने सूचनात्मक आधार को और कम कर दिया जिसपर सामाजिक वरण आकर्षित हो सकता था। बेंथन कैलकूलस की पहले से सीमित सचनात्मक आधार को और घटा कर बोंडा और कंडोरसेट के आधार तक कर दिया गया था, क्योंकि अन्तः व्यक्तिगत तुलना के बिना विभिन्न व्यक्तियों के उपयोगिता रैंकिंग का प्रयोग वि लेषणात्मक रूप से सामाजिक वरण बनाने में वोटिंग सूचना के प्रयोग के बहुत समान है।

इस सूचनात्मक प्रतिबन्ध के होते हुए उपयोगिता कल्याण अर्थ ाास्त्र ने 1940 के द ाक से आगे एक तथाकथित ''नए कल्याण अर्थ ाास्त्र'' ''यानी पेरेटो तुलना'' से हार मान ली जो सामाजिक तुलना के लिए वह केवल एक आधार मानदंड का प्रयोग करता है। यह मानदंड इस बात पर बल देता है कि वैकल्पिक स्थिति नि चत रूप से बेहतर होगी यदि परिवर्तन से हर किसी की उपयोगिता बढ़ जाए।[6] बाद के बहुत से कल्याण अर्थ ाास्त्र केवल ''पेरेटो दक्षता'' की ओर ध्यान को सीमित करते हैं (यानी केवल यह सुनि चत करते हैं कि आगे कोई पेरेटो सुधार संभव न हों) । यह मानदंड विवरणात्मक मामलों में जो भी हो कुछ रूचि नहीं दिखाता जिन का उपचार नहीं हो सकता जब तक कि हित और तरजीहों के विवाद पर विचार न किया जाए।

अधिक बड़ी पहुंच के साथ सामाजिक कल्याण निर्णय करने के लिए कुछ और मानदंड की स्पष्टता जरूरत है और इसपर अबराम बर्गसन (1938) और पाल ए. सेम्युलसन (1947) ने सूक्ष्मदृष्टि से छानबीन की। यह मांग ऐरो (1950–1951) के सामाजिक वरण सिद्धांत के पथप्रद ाक प्रतिपादन की ओर सीधे ले गई, सामाजिक तरजीह (सर निर्णयों) का संबंध वि ोश तरजीहो के सेट से बनाते हुए और इस संबंध को ''सामाजिक कल्याण फलन'' कहते हैं। ऐरो (1951, 1963) ने नर्म दिखाई देने वाली ार्तों पर विचार किया, जिसमें ाामिल थीः (1) पेरेटो दक्षता (2) गैर तरना ाही (3) स्वतन्त्रता (मांग करते हुए कि विकल्पों के किसी सैट पर सामाजिक वरण केवल उन विकल्पों के ऊपर तरजीहों पर आधारित होना चाहिए, और (4) अप्रतिबंधित प्रभाव क्षेत्र (मांग करते हुए कि सामाजिक तरजीहें एक पूर्ण आरर्डिंग होना चाहिए, पूर्ण अनित्यता, और इसे व्यक्तिगत पसन्दों के प्रत्येक कल्पनीय सेट के लिए काम काना चाहिए)

ऐरो की असंभवता प्रमेय नेद प्रदर्शित किया कि इन ार्तों का एक साथ पालन असंभव है।[7] इस असंभव परिणाम को परे रखने के लिए, आने वाले साहित्य में ऐरो की मांगों को सं ाोधित करने के लिए विभिन्न तरीकों कों आज़माया गया लेकिन अन्य कठिनाइयां उत्पन्न होती रही।[8] असंभवता परिणामों के बल और व्यापक मौजूदगी ने निरा ाावाद की समेकित भावना उत्पन्न की और कल्याण अर्थ ाास्त्र और सामाजिक वरण सिद्धांत में सामान्यतः यह प्रमुख विचार बन गया।

---

6 या कम से कम इसने कम से कम एक व्यक्ति की उपयोगिता बढ़ाई और किसी के हितों की हानि नही की।

7 ऐसी ढांचागत परिकल्पना भी है कि कम से कम दो वि ाष्ट व्यक्ति है (लेकिन असीम रूप से बहुत नहीं) ओर कम से कम तीन वि ाष्ट सो ाल स्टेट्स (ाायद बहुत अवास्तविक परिकल्पना नहीं जो अर्थ ाास्त्रीयों ने कमी की हो)। यहां बतायी सूक्तियां वहीं है तो ऐरो प्रमेये के बाद के रूपांतर में हैंः ऐरो (1963)। क्योंकि यहां प्रस्तुतीकरण अनौपचारिक है और कुछ तकनीकी संदिग्धता की अनुमति देती है, जो सहीपन चाहते हैं वे ऐरा (1963) या सेन (1970) या फि ाबर्न (1973) या कैली (1978) के औपचारिक कथन देखें। सबूत के बारे में बहुत से रूपांतरण हैं जिनमें, बे ाक, ाामिल है ऐरो (1963)। सेन (1995) में एक बहुत छोटा और आरंभिक सबूत दिया गया है। अन्य के साथ–साथ देखें सेन (1970, 1979) बलाऊ (1972), राबर्ट विलसन (1975), कैली (1978), सालबाडोर बारबेरा (1980, 1983), बिनमोर (1994) जान जीनाकोपोलस (1996)।

8 साहित्य की सूक्ष्म समीक्षा के लिए देखें कैली (1978), फेल्डमैन (1980) पट्टनायक और सेलेस (1983), सूजूमोर (1983), हम्मण्ड (1985), वाल्टा पी हैलर (1986), सेन (1986 क, ख), म्यूलेर (1989) और ऐरो (1997)।

IV औपचारिक पद्धतियों और औपचारिक विवेचन की अनुपूरकता

महत्वपूर्ण मामलों पर आगे बढ़ने से पहले यह उपयोगी होगा कि इसका और संबंधित प्र नों का उत्तर देने के लिए प्रयुक्त तक के स्वरूप पर थोड़ी चर्चा की जाए। सामाजिक वरण सिद्धांत एक विषय है जिसमें औपचारिक गणितीय तकनीकों का व्यापक इस्तेमाल किया गया है। जो तर्क की औपचारिक विधियों (वि ोषत गणितीय की) के बारे में सन्देह रखते हैं, वे बहुधा वास्तविक जगत की समस्याओं पर इस प्रकार की चर्चा की उपयोगिता के प्रति ांकालू होते हैं। उनका समझने योग्य है लेकिन यह अन्ततः अनुचित है। विभिन्न व्यक्तियों की विभिन्न पसन्दों या हितों से एक समेकित चित्र प्राप्त करने की कोि ा ा के अभ्यास में बहुत सी जटिल समस्याएं होती हैं जिनकी औपचारिक छानबीन के अभाव में किसी को भी गम्भीर रूप से बहकाया जा सकता है। वास्तव में ऐरो (1950, 1951, 1963) का असंभावना प्रमेय– इस क्षेत्र में बहुत तरीकों से ''लोकस क्लासीकस'' का आप समझ या अनौपचारिक तर्क के आधार पर मुि कल से हो पूर्वानुमान लगाया जा सकता है। यह इस परिणाम के विस्तारों पर भी लागू होता है, उदाहरणार्थ इस प्रद ान पर कि ऐरो की असंभावना के बिलकुल समान असंभावना सामाजिक वरण की भीतरी संगति की आरोपित किसी मांग के बिना भी टिकी रहती है। देखें सेन (1993क, प्रमेय 3)। सामाजिक वरण सिद्धांत में कुछ महत्वपूर्ण मामलों पर परिचर्चा के प्रक्रम में मुझे कुछ परिणामों पर विचार करने का अवसर मिलेगा जिनका भी औपचारिक विवेचन के बिना आसानी से पूर्वानुमान नहीं किया जा सकता । औपचारिक अन्तर्दृष्टियां, चाहे महत्वपूर्ण है लेकिन वे औपचारिक जांचों को प्रतिस्थापित नहीं कर सकती जो सुस्पष्ट प्रं ासनीय मांगों और मानों के संयोजन के सामंजस्य और अकाट्यता की जांच के लिए जरूरी होती है।

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि सामाजिक वरण सिद्धांत के लिए प्रयोग के लिए व्यापक सार्वजनिक संचार का काम महत्वपूर्ण होता है। सामाजिक वरण सिद्धांत के लिए प्रयोग केन्द्रीय तौर पर महत्वपूर्ण कि औपचारिक वि लेषण को अनौपचारिक और सुस्पष्ट जांच के साथ सम्बद्ध किया जाए। मुझे स्वीकार करना है कि मेरे अपने मामले में वास्तव में यह संयोजन एक प्रकार की सनक बना गया है और कुछ पहले विचार जिनका मेरे लिए महत्व है। जैसा कि सूचानात्मक विस्तार के लिए पर्याप्त ढांचा, आंि ाक आर्डरिंग की आंि ाक तुलना का प्रयोग और वरण अनौपचारिक स्पष्टीकरण और प्रभावनीय जांच की एक साथ मांग कर रहे हैं।[9] हमारे गहराई से महसूस किए गए, वास्तविक चिन्ताओं को औपचारिक और गणितीय तर्क के वि लेषणात्मक प्रयोग के साथ अच्छी तरह समेकित करना होगा।

V संभावना और असंभावना की निकटता

संभावना और असंभावना परिणामों के बीच सामान्य संबंध पर भी कुछ ध्यान देना जरूरी है ताकि असंभावना प्रमेयों के स्वरूप और भूमिका को समझा जा सके। जब सामाजिक वरण के बारे में स्वयंसिद्धों का एक सैट एक साथ सब सन्तुष्ट किए जा सकते हैं तो कुछ संभव प्रक्रियाओं होती हैं जो काम करती हैं जिनके बीच हमारी कोई पसन्द नहीं होती। विभेदकारी स्वयंसिद्धों के प्रयोग के माध्यम से विभिन्न संभावनों के बीच चुनने के लिए हमें और स्वयं सिद्धों को समाविष्ट करना पड़ता है जब तक कि केवल एक संभव प्रक्रिया न रह जाए। यह सीमांतवर्तिता में एक प्रकार का अभ्यास है। हमें वैकल्पिक संभावनाओं को काटते हुए जाना है, और अस्पष्ट रूप से एक असंभवता की ओर चलना है जबतक सभी संभावनाएं विलोपित नहीं हो जाती इसके ठीक पहले ही एक विकल्प तक हमें रूकना है।

इस प्रकार, यह स्पष्ट होना चाहिए सामाजिक वरण बनाने की एक वि ोष विधि के पूर्ण स्वयं सिद्ध अनिवार्य रूप से असंभवता के पास ही रहेगा–वास्तव में, ठीक इसके पास ही। यदि

---

9 वास्तव में सामाजिक वरण सिद्धांत में मेरे मुख्य प्रबन्ध–कुलेक्टिव चायस एंड सो ाल वेल्फेयर (सेन 1970 क) में औपचारिक वि लेषण वाले अध्याय (''तारांकित'' अध्याय) और औपचारिक कि परिचर्चा (अतरांकित अध्याय) से संबंधित अध्याय बारी बारी से आते हैं।

यह संभावना से दूर रहता है (विभिन्न सकारात्मक संभावनाओं के साथ) तब हमें यह सामाजिक वरण के किसी वि ाष्ट विधि का एक स्वयंसिद्ध व्युत्पत्ति नहीं दे सकता। अतः यह प्रत्या ा की जाती है कि सामाजिक वरण सिद्धांत में रचनात्मक पथ, जिन्हें स्वयं सिद्ध विवेचन से उत्पन्न किया गया है वे असंभावना परिणाम के एक पहलू पर रहने का झुकाव रखेंगे (बहुसंभावनाओं के पार्श्व के विपरीत पार्श्व पर)। इस निकटता से सामाजिक वरण सिद्धांत (या उसकी विषय वस्तु) के भुरभुरापन के बारे में कोई निष्कर्ष उत्पन्न नहीं होगा।

वास्तव में, ऐरो के रचना कार्य के बाद के साहित्य में असंभवता प्रमेय दूसरे के करीब स्थित है।[10] अतः वास्तविक मामला असंभावना की व्यापकता नहीं है (यह सदा किसी वि ाष्ट सामाजिक वरण नियम की स्वयंसिद्ध उत्पति के निकट स्थित रहेगा) बल्कि प्रयुक्त किए जाने वाले स्वयंसिद्ध की पहुंच और उपयुक्तता। हमें उचित उपेक्षाओं को पूरा करने वाले व्यावहारिक नियामों को प्राप्त करने के मूलभूत कार्य में लग जाना चाहिए।

VI बहुमत निर्णय और सम्बद्धता

अब तक हुई चर्चा में मैंने कोई कोि ा ा नहीं की कि दूसरों की उपेक्षा करते हुए व्यक्तिगत पसन्द के वि ोष संरवमण पर अपना ध्यान केन्द्रित करूँ। औपचारिक रूप से यह ऐरो की ''अप्रतिबंधित क्षेत्र'' की स्थिति द्वारा उपेक्षित है, जो इस बात पर बल देती है कि सामाजिक वरण प्रक्रिया को व्यक्ति पसन्दों के प्रत्येक कल्पनीय समूह के लिए काम करना चाहिए। तथापि यह स्पष्ट होना चाहिए कि किसी निर्णय प्रक्रिया के लिए कुछ तरजीह प्रोफाइल सामाजिक निर्णयों की असंगतियों और असम्बद्धता को उत्पन्न करेंगे जबकि अन्य प्रोफाइल ऐसे परिणाम नहीं देंगे।

ऐरो (1951) ने ब्लैक (1948, 1958) के साथ मिलकर पर्याप्त प्रतिबंधों की खोज आरंभ की जो सुसंगत बहुमत निर्णयों की गारंटी देंगे। सुसंगत बहुमत निर्णयों के लिए आव यक और पर्याप्त ार्तों की असल में पहचान की जा सकती है (देखें मेन और पट्टनायक (1969)[11]। पहले की स्थितियां जिनकी पहचान की गई थी चाहे उनसे ये बहुत कम प्रतिबंध है, लेकिन अभी भी वे बहुत अतृप्त हैं; वास्तव में यह दिखाया गया है कि बहुत वास्तविक स्थितियों में उनका आसानी से उल्लंघन किया जा सकेगा।

बहुमत निर्णयों के औपचारिक परिणाम ही हमें वोटिंग आधारित सामाजिक वरण के बारे में बहुत आ ा दे सकते हैं–या इतनी ही निरा ा भी पैदा कर सकते हैं – जैसा कि सम्बद्धता और सामना (व्यक्तिगत पसन्दों के वास्तविक पैटर्न में) करने देंगे। समाज की समस्याएं दूसरों की तुलना मे कई आकारों में आती हैं और सामाजिक समस्याओं के इन परिणामों में कम आराम होगा। जब वितरण के मामले प्रमुख होते हैं और दूसरों की चिन्ता न करते हुए लोग अपने

---

10 देखें हेंसन (1968, 1969क, 1969 ख, 1976), सेन (1969, 1970क, 1977, 1993क), स् ावार्टस (1970, 1972, 1986), पट्टनायक (1971, 1973), एलन किरमान और डीटर मोंडरमान (1972), पैस कोलेल और सोनेनस् ीन (1972), विलसन (1972, 1975), फि ाबर्न (1973, 1974), प्लाट (1973, 1976), ब्राउन (1974, 1975), जॉनफोरजान और ग्रेथर (1974), बिनमोर (1975, 1994), सैलेस (1975), ब्लेयर (1976), जार्जबोंडस (1976, 1979), डोलाल्ड कैम्पबैल (1976), डेब (1976, 1977), पार्क्स (1976क, ख), सूजमूरा (1976क, ख, 1983) ब्लाऊ और डेब (1977), कैली (1978), पेलेग (1978, 1984), ब्लेयर और पोलक (1979, 1982), ब्लाऊ (1979), बारनार्ड मोनजारडेट (1979, 1983), बारबेरा (1980, 1983), चीचिलनिस्की (1976क, ख), चीलिलनिस्की और हील (1983), माउलिन (1983), केलसी (1984, 1985), विन्सेनज़ो डेनीकोलो (1985), यासूमी मटसूमोटो (1985), एज़रमैन और अलेस्केरो (1986), तारादास बन्धोयापयाय (1986), इसाक लेवी (1986) और कैम्पबेल और कैली (1997) और कई अन्य योगदान करने वाले।

11 केन इचीइनाडा (1969–1970) भी देखें जिससे इस सहित्य में बहुत योगदान दिया। विलियम एसविकारी (1960), बेजमन वार्ड (1965), सेन (1966, 1969), सेन और पट्टनायक (1969), और पट्टनायक (1971) भी देखें। संगत बहुमत निर्णय प्राप्त करने के लिए अन्य प्रकार के प्रतिबन्धों पर भी विचार किया गया है; देखें माइकल निकल्सन (1965), प्लाट (1967), गार्डेन टुल्लाक (1967), आईनाडा (1970), पट्टनायक (1975), ओटोडेविस (1972), फ़िभाबर्न (1973), कैली (1974क, ख, 1978), पट्टनायक और सेन गुप्ता (1974), एरिक मस्कन (1976क, ख, 1975), जीन माइकल ग्रैडमुन्ट (1978), पेलेग (1978, 1984), बुल्फ़ गेरटनर (1979), दत्ता (1980), चिचिलनिस्की और हील (1983) और सुजूमूरा (1983), अन्य योगदान करने वालों में से। पट्टनायक (1970), मस्कन (1976क, ख, 1995) और एहूद कलाई और ई मुल्लर (1977) द्वारा वोटिंग नियमों के बड़े वर्ग के लिए क्षेत्र प्रतिबंधों पर विचार किया गया है। व्यापक साहित्य गारटनेर (1998) द्वारा सर्वेक्षण निभिचत रूप से किया गया है।

''हिस्सों'' को अधिकतम बनाने की चेष्टा करते हैं (उदाहरणार्थ, ''केक बांटने'' की समस्या में हर कोई ऐसी बांट चाहता है जिससे उसका हिस्सा बढ़ जाए, भले ही लोगों को कुछ भी न मिले) तब बहुमत भाासन पूर्णत असंगत बनने का रूझान रखेगा। लेकिन जब राष्ट्रीय घोर अपमान का मामला है (उदाहरणार्थ प्रजातांत्रिक भाासन द्वारा अकाल को रोकने की योग्यता की प्रतिक्रिया में तो मतदाता उचित रूप से एकार्थक और पूर्णतः संगत हो सकते हैं)[12] जब पार्टियों में लोगों के समूह, जटिल कार्य सूचियों और बातचीत के साथ, जिसमें लेना देना भाामिल होता है और मानों जैसे साम्या या न्याय की ओर कुछ सामान्य रूझान होता है तो असंगतियां अधिक संगत निर्णयों के लिए भूमि पैदा कर देती है।[13]

कल्याण आर्थिक समस्याओं में केन्द्रीय तौर पर वितरण के मामलों के होते हुए, जहां तक कल्याण अर्थभाास्त्र का संबंध है, बहुमत भाासन और मतदान प्रक्रियाए विभोष रूप से असंगति की और अभिमुख होती है। तथापि पूछे जाने वाला एक मूलभूत प्रभन यह है कि पूछा जाए कि क्या मतदान नियम (जिसके लिए सामाजिक वरण प्रक्रियाएं ऐरोवियन ढांचे में प्रभावी ढंग से प्रतिबंधित हैं) कल्याण अर्थभाास्त्र के क्षेत्र में सामाजिक वरण के लिए उचित पहुंच उपलब्ध कराती हैं। क्या मतदान प्रणाली की विभिन्नता के माध्यम से सामाजिक कल्याण निर्णय लेने के लिए कोभिाभा करने के लिए सही क्षेत्र में है?

VII सूचनात्मक विस्तार और कल्याण अर्थभाास्त्र

मतदान–आधारित प्रक्रियाएं कुछ प्रकार के सामाजिक वरण समस्याएं जैसे चुनाव, जनमत संग्रह और समिति निर्णयों[14] के लिए पूरी तरह स्वाभाविक होते हैं। तथापि वे बहुत सी अन्य सामाजिक वरण की समस्याओं के लिए पूरी तरह से अनुपयुक्त होते हैं।[15] उदाहरणार्थ जब हम सामाजिक कल्याण का किसी प्रकार का पूरा इंडेक्स प्राप्त करना तो हम कम से कम दो वि ाष्ट कारणों से ऐसी प्रक्रियाओं पर भरोसा नहीं कर सकते।

पहला, मतदान के लिए सक्रिय रूप से भाग लेने की जरूरत होती है और यदि कोई फैसला करता है कि वह मतदान के अधिकार का प्रयोग नहीं करेगी तो उसकी पसन्द सामाजिक निर्णयों में कोई प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व नहीं पायेगी (वास्तव में निम्नतर भागीदारी के कारण, महत्वपूर्ण समूहों–उदाहरणार्थ यूनाइटेड स्टेट्स में अफ्रीकन–अमेरिकन–राष्ट्रीय राजनीति में अपर्याप्त प्रतिनिधित्व पा सकते हैं)। इसके विपरीत, उचित सामाजिक कल्याण निर्णय लेने में कम जोर देने वालों के हितों की उपेक्षा नहीं की जा सकती।

---

12 यही एक कारण है कि कोई अकाल कभी किसी स्वतन्त्रता और प्रजातांत्रिक देभा में नहीं हुआ (जहां बाहरी भाासकों, तानाभााहों या एक पार्टी स्टेट द्वारा भाासन न चलाया जा रहा हो)। देखें सेन (1984), ड्रेज और सेन (1989), फ्रांसेस डीसोजा (1990), हयूमन राइट्स वाच (1992), और रेड क्रास और रेड क्रीसेंट सोसाइटीज़ (1994)

13 सामान्य राजनीतिक विषय के विभिन्न पहलुओं के बारे में देखें ऐरो (1951), जेम्स बुकानन (1954क, ख), बुकानन और टुलाक (1962), सेन (1970 क, 1973 ग, 1974, 1977घ, 1984), सूजूमूरा (1983), हैमण्ड (1985), पट्टनायक और सैलेस (1985), एन्डरियू चैपलिन और बैरी नेलबफ (1988, 1991), यंग (1988), और गीनोथ (1991), अन्य लेखों के बीच और जर्नल आफ इकानोमिक पर्सपेक्टिव (विंटर 1995), में वोटिंग प्रक्रिया पर ''विचार गोष्ठी'' और इसके साथ जनाथन लेविन और नेलबफ (1995), द्वारा योगदानों सहित डुगलेसरे (1995), निकोलस टाइडमैन (1995), राबर्ट वैबर (1995), माइकल बरेटन और जॉन वेमार्क (1996) और सूजूमूरा (1999) अन्य के बीच।

14 वोटों और वास्तविक पसन्दों के बीच पत्राचार की सभव कमी से गम्भीर समस्याएं उत्पन्न हुई हैं जो नीतिगत मतदान के कारण भिन्न हो सकती हैं जिसका लक्ष्य मतदान परिणाम में छल कपट करना हैं। इस पर गिब्बार्ड (1973) और सटरेथवेर (1975) की ाानदार असंभावना प्रमेय देखें। छलकपट पर और क्रियान्वयन की चुनौतियों पर व्यापक साहित्य है और उसपर देखें पट्टनायक (1973, 1978), स्टीवन ब्राम्स (1975), टेडग्रोव और जान लैडयार्ड (1977), बारबेरा और सोनेन ाीन (1978), दत्ता और पट्टनायक (1978), पेलेग (197, 1984), स् ापसाइडलर और सोनेन ाीन (1978), दास गुप्ता (1979), ग्रीन और लैफ्फंड (1979), लैफफंट (1979), दत्ता (1980, 1997), पट्टनायक और सेनगुप्ता (1980), सेनगुप्ता (1980क, ख), लैफन्ट और मस्कन (1982), माउलिन (1983, 1995), और लिओ हरविक्ज (1985), अन्य योगदान करने वालों में। एक गैरनीति पूरक असंभावना ठीक एक–से–एक पत्राचार स्थापित करना है– (1) तरजीह देना (2) तरजीह न देना (3) उदासीन होना एक ओर (1) वोंटिग करना है (2) विरूद्ध मतदान (3) भाग न लेना, दूसरी ओर कोई परवाह नहीं कि वोट कीमती है या मजेदार है या कुछ नहीं। देखें सेन (1964)।

15 इसके बारे में देखें सेन (1970क, 1977क)।

दूसरा, हर व्यक्ति की मतदान प्रक्रिया सक्रिय ामूलियत होने पर भी कल्याण आर्थिक मूल्यांकन के लिए अपेक्षित महत्वपूर्ण सूचना से थोड़ी कम ही मिल पायेगी। इस पर देखें सेन (1970क, 1973क)। मतदान के माध्यम से, प्रत्येक व्यक्ति विभिन्न विकल्पों की व्यवस्था कर सकता हैं। लेकिन वोटिंग–डेटा से विभिन्न व्यक्तियों के कल्याण की अन्तः वैयक्तिक तुलनाएं प्राप्त करने का कोई प्रत्यक्ष तरीका नहीं है। हमें मतदान नियमों की श्रेणी से परे जाना चाहिए (बोर्डा और कंडोसट और ऐरो द्वारा खोजे गए) ताकि वितरण मामलों का समाधान किया जा सके।

ऐरो ने अन्तः व्यक्गित तुलनाओं के प्रयोग को वर्जित किया है क्योंकि उसने आय सर्वसम्मती का अनुसरण किया है जो 1940 के द ाक में उत्पन्न हुई (जैसा ऐरो ने कहा) कि ''उपयोगिताओं की अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं का कोई अर्थ नहीं है'' (ऐरो 1951 पृष्ठ 9)। ऐरो द्वारा इस्तेमाल स्वयंसिद्ध संयोजन की समग्रता का प्रभाव यह हुआ कि सामाजिक वरण प्रक्रियाओं को नियमों तक सीमित किया गया जो मोटे तौर पर कहें तो, वोटिंग प्रकार के है।[16] उसके असंभावना नियम इसलिए नियमों की इस श्रेणी से संबंधित हैं।

रचनात्मक साामाजिक वरण सिद्धांत की बुनियाद रखने के लिए यदि हम सामाजिक वरण में अन्तः वैयक्तिक तुलनाओं के प्रयोग के विरूद्ध ऐतिहासिक मतैक्य को रद्द करना चाहें तो हमें दो महत्वपूर्ण और कठिन प्र नों को लेना चाहिए। पहला, क्या हम योजनाबद्ध तरीके से किसी चीज़ को ाामिल और इस्तेमाल कर सकते हैं जो ऐसी जटिल है जैसे अन्तः वैयक्तिक तुलनाएं जिसमें बहुत से लोगों को ाामिल किया जाता है? क्या यह अनु ाासित वि लेषण का क्षेत्र होगा बजाए इसके कि उलझे विचारों (और संभवतः चकराये हुए) का हंगामा है? दूसरा, वि लेषणात्मक परिणामों को व्यावहारिक प्रयोग के साथ कैसे समेकित किया जा सकता है? किस प्रकार की सूचना को हम उचित रूप से अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं का आधार मान सकते हैं? क्या संबंधित सूचना प्रयोग के लिए वास्तव में उपलब्ध होगी?

पहला प्र न मुख्यतः वि लेषणात्मक प्रणाली के निर्माण का हैं और दूसरा ज्ञान ाास्त्र और व्यावहारिक कारण का है। बाद के विषय के लिए अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं के सूचनात्मक आधार की पुनः जांच अपेक्षित है और मेरी व्यक्तिगत राय है कि इसके लिए अनिवार्यतः सीमित उत्तर चाहिए। लेकिन पहले प्र न को अधिक नि चत रूप से रचनात्मक वि लेषण के माध्यम से लिया जा सकता है। जो साहित्य उत्पन्न हुआ है उसकी तकनीकों में जाये बिना मैं यह कहना चाहूंगा कि विभिन्न प्रकार की अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं को पूर्ण रूप से स्वयंसिद्ध बनाकर सामाजिक वरण प्रक्रिया में ठीक तरह से ाामिल किया जा सकता है (सामान्यकृत ढांचे में ''स्थिर स्थितियों'' के प्रयोग के माध्यम से, औपचारिक रूप से ''सामाजिक कल्याण फलनक'' के रूप में निर्मित; जिसपर देखें सेन 1970क, 1977ग) [17]। वास्तव में, इस बात की जरूरत नहीं है कि अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं को ''सभी या कोई नहीं'' द्विभाजकों तक सीमित

---

16 यह बताना जरूरी है कि मतदान नियमों के लिए सामाजिक वरण प्रक्रियाओं के मतदान नियमों तक प्रतिबंधित करना ऐसी परिकल्पना नहीं है जिसे ऐरो (1951, 1963) द्वारा आरंभ किया गया था, यह उनके द्वारा स्थापित असंभावना प्रमेय का भाग है। यह विवेचित सामाजिक वरण के लिए प्रतिपादित स्पष्ट रूप से उचित स्वयंसिद्धों के एक सेट का वि लेषणात्मक परिणाम है। बे ाक उपयोगिताओं की अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं स्पष्टतया बाहर रखा गया है, लेकिन ऐरो के प्रमेय का सबूत दिखता है कि अन्य युक्तियुक्त परिकल्पानओं के सेट को एक साथ लिया जाता है तो वे मतदान नियामों के अन्य तत्वों को भी तर्कपूर्ण ठंग से आव यक बना देता है। अपने आप में एक अद्भुत वि लेषणात्मक परिणाम है। व्युसन्न तत्वों में वि ोषतः अतृप्त अपेक्षाएँ ाामिल हैं कि सो ाल स्टेट्स के स्वरूप की ओर प्रभावी तौर पर ध्यान न दिया जाए: केवल वोटों पर ध्यान दिया जाए जो उनके पक्ष में और विरोध में डाले जाते हैं (एक वि ोषता जिसे बहुधा ''तटस्थता'' कहते हैं कुछ हद तक खु ाामदी नाम लेकिन जो केवल एक रचनात्मक प्रतिबंध है)। जबकि अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं की उपयोगिताओं से अलग रहने से उपयोगिताओ की असमानता और उपयोगिताओं की लाभ और हानियों के अन्तर पर ध्यान देने की संभावना विलोपित हो जाती है तटस्थता का आव यक घटक ध्यान को रोकता है जो संबंधित सो ाल स्ट्टस के स्वरूप का वि ोष ध्यान रखते हुए वितरण विषयों की ओर अप्रत्यक्ष रूप से दिया जाता है (उदाहरणार्थ विभिन्न राज्यों में आय की असमानताएं)। असंभावना परिणाम उत्पन्न करने में प्रेरित सूचनात्मक बाधाओं की भूमिका पर सेन (1977ग, 1979 ख) में चर्चा की गई है।

17 अन्य योगदानों के बीच देखें पैट्रिक सप्पेस (1966), हैम्पण्ड (1976, 1977, 1985), स्टीफन स्ट्रास्नीक (1976), ऐरो (1977), डीएस्प्रीमोंट और गीवर्स (1977), मस्कन (1978, 1979), गीर्वस (1979), केविन राबर्टस (1980क, ख), सूजूमूरा (1983, 1997), चार्ल्स ब्लैर्कोबाई (1984), डी एस्प्रीमोंट (1985) और डी एस्प्रीमोंट और फिलिप मौजिन (1998)।

रखा जाए। हम कुछ सीमा तक अन्तः व्यक्तिगत तुलनाएं कर सकते हैं लेकिन हर तुलना में नहीं, न ही प्रत्येक प्रकार में और न ही बहुत ज्यादा यथार्थता में (देखें सेन 1970 क, ग)।

उदाहरणार्थ, हमें यह स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं है कि रोम के जलने से बाद ाह नीरो का उपयोगिता लाभ सभी दूसरे रोम वासियों की हानि की तुलना में थोड़ा था जिन्हें आग के कारण कष्ट हुआ। लेकिन इससे हमें आ वस्त होने की जरूरत नहीं है कि हम हर एक की उपयोगिताओं को एक दूसरे के साथ एक–से–एक तक अनुरूपता से रख सकते हैं। इस प्रकार, ''आं ाक तुलनीयता'' की मांग करने की गुंजाइ ा है–दोनों ही आत्यंतिक स्थितियों से इनकार करते हुएः पूर्ण तुलनीयता या बिलकुल कोई तुलनीयता नहीं। आं ाक तुलनीयता के विभिन्न विस्तारों को गणितीय रूप से सही रूप दिया जा सकता है। (ठीक ठीक ढंग से अयथार्थता का सही विस्तार बताना।[18] यह भी दिखाया जा सकता है कि नि चत सामाजिक निर्णयों पर पहुंचने के लिए भीषण रूप से परिष्कृत अन्तः व्यक्तिगत तुलना की कोई सामान्य निर्णय लेने के लिए पर्याप्त होंगे। [19] इस प्रकार अनुभव सिद्ध अभ्यास इतना उच्चाकांक्षी बनाने की जरूरत नहीं है जैसा कि कई बार डर लगता है।

अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं के सूचनात्मक आधार तक बढ़ने से पहले मुझे एक बड़ा वि लेषणात्मक प्र न पूछने की अनुमति देंः अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं के योजनबद्ध प्रयोग से सामाजिक वरण की संभावना में किसी तबदीली लाई जा सकती है? क्या ऐरो की असंभावना और संबंधित परिणाम सामाजिक कल्याण निर्णयों में अन्तः वैयक्तिक तुलनाओं के प्रयोग से समाप्त हो जाते हैं? संक्षेप में इसका उत्तर हां हैः अतिरिक्त सूचनात्मक उपलब्धता पर्याप्त भेदभाव की अनुमति देती है ताकि इस प्रकार की असंभावनाओं से बचा जा सके।

जहां एक दिलचस्प विरोध है। यह दिखाया जा सकता है कि अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं के बिना उपयोगिताओं की प्रमुखता को स्वीकार करने से ऐरो के असंभावना प्रमेय की बिल्कुल नहीं बदला जा सकता जिसे आसानी से उपयोगिताओं के मूलभूत माप को बढ़ाया जा सकता है। (देखें सेन में प्रमेय $82^{(4)}$ 1970क)। इसके विरोध में क्रमबद्ध अन्तः व्यक्तिगत तुलनाएं सही असंभावना को तोड़ने के लिए पर्याप्त हैं। बे ाक हम जानते हैं कि पूरे रूप में मांगी गई अन्त व्यक्तिगत तुलनाओं के कुछ प्रकार (क्रमबद्ध अन्तः व्यक्तिगत असंभावनाओं सहित) संस्थापित उपयोगिता पहुंच का प्रयोग कर सकते है। [20] लेकिन यह देखा जाता है कि तुलना के कमजोर रूप भी संगत सामाजिक कल्याण वितरण चिन्ताओं के प्रति संवेदन ाील रहेंगे (चाहे संभव नियम अपेक्षाकृत एक छोटे वर्ग तक सीमित रहेंगे)[21]।

वास्तव में वितरण विषय इस जरूरत से गहरे रूप से सम्बद्ध है कि सामाजिक कल्याण निर्णयों के आधार के रूप में मतदान नियमों से परे जाया जाये। जैसाकि पहले चर्चा की गई थी, उपयोगितावाद भी एक रूप में वितरण उदासीन हैः इसका कार्यक्रम उपयोगिताओं के कुल योग को अधिकतम बनाना है। चाहे उस कुल योग को कैसे असमानता से बांटा जाएं (इस

---

18 देखें सेन (1970क, ग), ब्लैर्कोबाई (1995), कौ ाक बासु (1980), टीबेंजेम्बिंडर और पी वैन अकेर (1980) और लेवी (1980)। अयथार्थता क अध्ययन को ''अस्पष्ट'' चरिचित्रण तक भी बढ़ाया जा सकता है।

19 देखें एन्थनी एटकिंसन (1970), सेन (1970क, ग, 1973क), दासगुप्ता (1973) और माइकल रायस्चाइल्ड और जोज़िक स्टिगलर (1973)

20 इस पर वि ोषतः देखें जान हरसानयी (1955), ाास्त्रीय प्रबन्ध जो निरा ावादी साहित्य के सामने खड़ा हो गया जो ऐरो (1955) के असंभावना प्रमेय के बाद आया। जेम्स मिरलीस (1982) भी देखें।

21 देखें सेन (1970क, 1977ग), राऊल (1971), एडमण्ड फैल्पस (1973), हैम्पण्ड (1976), स्ट्रासनिक (1976), ऐरा (1977), डी एस्प्रीमोंट और गीवर्स (1977), गीवर्स (1979), राबर्टस (1980क, ख), सूजूमूरा (1983, 1987), ब्लैर्बोई (1984) और डी एस्प्रीमोंट अन्य योगदानों के बीच।

वितरण उदासीनता की व्यापक जटिलताओं पर सेन (1973क में चर्चा की गई) लेकिन अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं का प्रयोग प्रति संवेदन ील रहें।

समाजिक कल्याण फ़लनकों की व्यापक पहुंच इस संभावना को खोलती है कि विभिन्न प्रकार के सामाजिक कल्याण नियमों का प्रयोग किया जाए जो साभ्यता और दक्षता से व्यवहार और अपनी सूचनात्मक जरूरतों में भिन्नता रखते हैं।[22] इसके अलावा, कृत्रिम अवरोधों को हटाने पर, जिन्होंने अन्त व्यक्तिगत तुलनाओं को वर्जित किया था नियामक माप के कई दूसरे बहुत से क्षेत्रों की भी सामाजिक कल्याण वि लेषण की स्वयंसिद्ध पहुंच के साथ–जांच की गई है। असमानता के मापन और मूल्यांकन के रूप में ऐसे क्षेत्रों में मेरे अपने प्रयास ने आधुनिक सामाजिक वरण सिद्धांत के बढ़ाए गए सूचनात्मक ढांचे को ठोस ढंग से प्राप्त किया है (सेन 1973 क, 1997 ख), गरीबी (सेन 1976ख, 1983ख, 1985क, 1992क) वितरण संभवत राष्ट्रीय आय (सेन 1973ख, 1976क, 1979क) और पर्यावरणीय मूल्यांकन (सेन, 1995क)।[23]

VIII अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं के आधारों का सूचनात्मक आधार

जबकि अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं को ामिल करने में वि लेषणात्मक मामलों का समग्र रूप से, अच्छी तरह से वर्गीकरण किया गया है, लेकिन अन्तः व्यक्तिगत तुलनाएं करने के अनुभवसिद्ध अनु ासन के प्रति एक पर्याप्त रूख प्राप्त करने का महत्वपूर्ण व्यावहारिक मामला और तब उन्हें अभ्यास में इस्तेमाल करना अब भी ोष है। इसमें पूछा जाने वाला सबसे महत्वपूर्ण प्र न हैः अन्तः व्यक्तिगत तुलना किसकी?

समाजिक कल्याण फलनों के औपचारिक ढांचे किसी भी रूप में केवल उपयोगिता तुलनाओं के लिए वि िष्ट नहीं है और वे अन्य प्रकार के अन्त व्यक्तिगत तुलनाओं को भी ामिल करते हैं। मुख्य विषय यह है कि वि ोश लाभ के लेखाकरण का कुछ विकल्प हो जिस के लिए जरूरी नहीं कि खु ी की मानसिक स्थिति की तुलनाओं का रूप ले बल्कि बजाय वि ोश कल्याण या आजादी या पर्याप्त अवसरों (जिन्हें अनुकूल मूल्यनिर्धारिक अनु ासन के संद ा में देखा जाए) को देखने के कुछ दूसरे तरीके पर ध्यान दिया जाए।

दृढ़ नि चयी आलोचना (जैसे के राबिंस 1938 की) के बाद कल्याण अर्थव्यवस्था और सामाजिक वरण सिद्धांत में उपयोगिताओं की अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं का अस्वीकरण इस बात पर मजबूती से आधारित था कि केवल मानसिक स्थितियों की तुलनाओं के रूप में उनकी व्याख्या की गई। जैसा कि होता है, ऐसी मानसिक स्थिति तुलनाओं के होते हुए भी अयोग्य अस्वीकृति को बनाए रखना कठिन है।[24](24) वास्त्व में; जैसा कि दा निक डोनल्ड डेविडसन (1986) ने सावधनीपूर्वक आपति उठाई थी, यह देखना मु कल है कि लोग दूसरे लोगों के मन और भावनाओं को कैसे समझ सकते हैं जब तक कि वे अपने मन या भावनाओं से उनकी

---

22 इस पर और संबंधित विषयों को देखें सेन (1970क, 1977ग), हैम्पण्ड (1976), डी एस्परीमोंट और गीवर्स (1977), राबर्ट डेस ैम्प और गीवर्स (1978), मस्कन (1978, 1979), गीवर्स (1979), राबर्टस (1980क), सिद्दीकी और ओसमानी (1982), ब्लैकरबाई (1984), डीएस्प्रेमोंट (1985), टी कौलहोन और मोनजिन (1989), निक बेजेन्ट (1994), और डीएस्प्रोमोंट और मोंजिन (1998), बहुत से अन्य योगदानों में देखें हरसानमाई (1955) और सुपेस (1966), को अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं के प्रयोग के पथ प्रद िक वि लेषण के लिए देखें। एलेस्टर और जॉन रोयमेर (1991) ने इस विषय पर बढ़िया आलोचनात्मक लेखा उपलब्ध कराया है।

23 असमानता पर मेरे कार्य को (जो सेन 1973क, से आरंभ्ज्ञ हुआ था) एटकिंसन (1970, 1983, 1989), के पथप्रद िक योगदानों द्वारा वि ोष रूप से प्रभावित किया गया है। हाल ही में इस विषय पर साहित्य बड़ी तेजी से बढ़ाते; आलोचान्तमक जांच और समकालीन साहित्य के संदर्भों के रूप में देखें जान फोस्टर और सने (1997)।

24 यदि अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं को राय का या मान निर्णय का केवल एक पदार्थ मान लिया जाए तो यह भी प्र न उठाया जा सकता है कि विभिन्न विचारों या विभिन्न व्यक्तियों के मूल्यांकनों को कैसे एक साथ जोड़ा जाए (ऐसा सामाजिक वरण अभ्यास की तरह ही दिखाई देता है)। राबर्टस (1995) से हए वि ोश प्रतिपादन की व्यापक जांच की है और अन्तः व्यक्तिगत तुलना को विचारों के समूहन का अभ्यास माना है। फिर भी, यदि यह माना जाता है कि अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं का कोई अधिक मजबूत वास्तविक आधार है (यानी कुछ व्यक्ति, तटस्थ रूप से दूसरे व्यक्तियों की तुलना में अधिक लाचार होते हैं) तब अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं के प्रयोग के लिए स्वयंसिद्ध एक भिन्न सेट की जरूरत होगी जो नैतिकता की बजाए ज्ञान ास्त्र के लिए अधिक उपयुक्त होगा। कल्याण की अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं पर विरोधी संद ों के लिए आइन लिटिल (1957), सेन (1970 के, 1985 ख) टी बो (सीटोवस्की (1976) और गिब्बर्ड 1986) देखें अवलोकित गरीबी के अनुभवसिद्ध अध्ययन भी देखें। (उदाहरणार्थ डरेज और सेन 1989, 1990, 1995, 1997, ऐरिक स् ोकर्ट और लुकवेन ऊटेजेम 1990, राबर्ट सोलो, 1995)।

तुलना न करें। ऐसी तुलनाएं अत्यन्त सुस्पष्ट नहीं हो सकती, लेकिन तब फिर, हमें वि लेषणात्मक जांचों से पता चलता है कि सामाजिक वरण में अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं का योजनाबद्ध प्रयोग करने के लिए बहुत सुस्पष्ट अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं की जरूरत नहीं है। (इस पर और संबंधित विषयों पर देखे सेन 1970क, 1977ख, ब्लैकोंबाई, 1975)।

इस प्रकार मानसिक स्थिति तुलनाओं की पुरानी घरेलू जमीन पर भी चित्र बहुत अधिक निरा ावादी नहीं हुए हैं। लेकिन अधिक महत्वपर्ण यह है कि व्यक्तिगत कल्याण या व्यक्तिगत लाभ की अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं के केवल मानसिक स्थिति की तुलनाओं पर आधारित करने की जरूरत नहीं है। वास्तव में मानसिक स्थिति तुलनाओं (भले ही वो आनन्द की हों या इच्छाओं की) पर बहुत अधिक ध्यान केन्द्रित न किया जाए इसके अच्छे नैतिक आधार हो सकते हैं। लगातार हानियों की प्रक्रिया में कई बार उपयोगिताएं आघात वधर्क हो सकती हैं । एक लाचार दीन–हीन बहुत ही गरीबी के साथ, या एक पददलित श्रमिक भोशणकारी आर्थिक प्रबंधों के अधीन रहता हुआ, अन्तर्निहित लिंग असमानता के साथ समाज में अधीन रखी गई ग्रहिणी, या क्रूर ताना ाही से त्रस्त नागरिक अपनी हानियों से समझौता कर लेते हैं। छोटी छोटी उपलब्धियों से वह कुछ खु ी प्राप्त कर लेती हैं और संभाव्यता को ध्यान में रखते हुए अपनी इच्छाओं को समायोजित कर लेती हैं (जिससे समायोजित इच्छाओं को पूरा करने में उसे सहायता मिलती है)। लेकिन ऐसे समायोजन में उसकी सफलता से हानि समाप्त नहीं हो जाती। किसी व्यक्ति की कितनी भी सारभूत हानि हुई है उसके लिए खु ी या इच्छा को मापने का पैमाना कई बार अपर्याप्त होगा[25]

किसी व्यक्ति के लाभ के बारे में निर्णय लेने में आय या पणय बंडल या समान्यतः संसाधन लेने को प्रत्यक्ष हित माना जा सकता है और ऐसा विभिन्न कारणों से होता है – केवल मानसिक स्थिति के लिए ही नहीं हतसे उत्पन्न करने में वे सहायता देते हैं[26]। ''न्याय उपयुक्तता के रूप में'' के राउल (1971) के विभेद नियम का सिद्धांत, वास्तव में किसी व्यक्ति के ''मुख्य माल'', जैसा राउल कहता है, पर आधिपत्य पर आधारित होता है, जो सामान्य प्रयोजन संसाधन होते हैं जो हर व्यक्ति के लिए लाभप्रद होते हैं चाहे उसके सही उददे य कुछ भी रहे हों।

न केवल मुख्य माल और संसाधनों की मलकीयत का बल्कि बेहतर जीवन के लिए उन्हें क्षमता में परिवर्तित करने की क्षमता में अन्तः व्यक्तिगत विभेदों पर भी ध्यान देकर इस प्रक्रिया में सुधार किया जा सकता है। वास्तव में, मैंने परस्पर क्षमताओं के रूप में व्यक्तिगत लाभ के पक्ष में तर्क देने की कोि ा ा की है, क्षमताएं जो व्यक्ति रखता है और उस तरह रहता है या रहती है जिसे मान देने का कारण है[27]। यह पहंच महत्वपूर्ण आजादियों पर ध्यान केन्द्रित करती है जो व्यक्तियों के पास है बजाय इसके कि वि ोश निश्कशों पर केन्द्रित हो जिसके साथ वे समाप्त हो जाते हैं। जिम्मेदार व्यस्यकों के लिए केवल उपलब्धियों की बजाए आजादी पर ध्यान केन्द्रित करने मे कुछ गुण हैं और समकालीन समाज में व्यक्तिगत लाभ और हानि के लिए एक सामान्य ढांचा उपलब्ध करा सकता है। अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं का विस्तार केवल आं ाक

---

25 इस विशय और उसकी दूरगामी नैतिक और आर्थिक विवक्षाओं पर चर्चा सेन 1980, 1985 क, 1985 ख में की गई है। बासू 1995 भी देखें।

26 वास्तविक आय तुलनाओं की कल्याण सम्बद्धता को मानक – स्थिति सहसंबंधों से अलग किया जा सकता है, देखें सेन (1979 क) ''औचित्य'' गैर–ईर्श्या के रूप में देखा गया पर संबंधित साहित्य भी देखें, उदाहरणार्थ, डैकनफोले (1967), सर्ज क्रिस्टोफ़े कोल्प (1969), एली ा पाज़नेर और डेविड स् ामेडलर (1974) हाल वेरियन (1974, 1975), लार्स गन्नर स्वेनसन (1977, 1980), रोनल्ड डवोरकिन (1981), सूजूमूरा (1983), यंग (1985), कैम्पबेलर (1992) तथा माउलिन और विलियम थामसन (1997)। पण्यों के अन्तः व्यक्तिगत वितरणों पर प्रत्यक्ष सामाजिक निर्णयों का वि लेशण फ्रैंकलिन एम फि ार (1956) द्वारा किया गया है।

27 देखें सेन (1980, 1985 क, ख, 1992 क) डरेज और सेन (1989, 1995), पार्थानुसबाउम और सेन (1993), देखें रोपर (1982, 1996), बासू (1987) नुसबाउप (1988), रिचर्ड अरनेसन (1989), एटकिनसन (1989, 1995), जी ए कोहेन (1989, 1990), एफ बोरजीजनन और जी फील्ड (1990), कीथ ग्रिफन और जान नाइट (1990), डेविड क्रोकर (1992) सुधीर आनन्द और मार्टिन रवालिन (1993) ऐरो (1995) मेंघनान्द देसाई (1995), और पटटनायक व दूसरे योगदानों के साथ। क्षमता संद ों पर कई महत्वपूर्ण विचार गोश्ठियां हुई हैं जैसा कि गोएरनेल (1994) और नोटीजी (1996) वि ोश वाल्यूम एलेस्संडरो बालेस्टरीनों (1994, 1996) जीबोवानी आंदरे कोरनिया (1994) ऐलेना ग्रेनगलिया (1994, 1996) एनरीका मारटीनेटी (1994, 1996), सेबासटीएनो बावेटटा 1996, आयन कारटर (1996) लियोनार्ड सेसीनी और आयाकोपो बरनेटी (1996) और भाहर ोब रजवी (1996), देखें सेन (1994, 1996 ख) इन योगदानों के लिए मेरे उत्तरों सहित।

हो सकता है – बहुधा विभिन्न दृश्टिकोणों के प्रतिच्छेद पर आधारित होता है।[28] लेकिन आं ाक तुनीयता तर्क संगत सामाजिक निर्णय के सूचनात्मक आधार में बड़ा अन्तर बना सकती है किन्तु विशय के स्वरूप और सूचनात्मक उपलब्धता और मूल्यांकन में वयावहारिक कठिनाइयों के रहते हुए यह अति महत्वांकाक्षा होगी कि कठोर एकान्तिक होते हुए केवल एक सूचनात्मक पहंच तक रहा जाए और बाक सभी को रदद कर दिया जाए। आधुनिक साहित्य में अनुप्रयुक्त कल्याण अर्थ ाास्त्र के कल्याण के उचित व्यक्तिगत तुलनाएं करने के विभिन्न तरीके उत्पन्न हुए हैं। कुछ व्यय पैटर्नों के अध्ययन पर आधारित किए गऐ हैं और इसका प्रयोग करके विभिन्न व्यक्तियों के तुलनात्मक तरीके उत्पन्न हुए हैं। कुछ व्यय पैटर्नों के अध्ययन पर आधारित किए गए हैं और इसका प्रयोग करके विभिन्न व्यक्तियों के तुलनात्मक कल्याण के बारे में अनुमान लगाया गया है (देखें पोल्लाक और टेरीनस वेल्स 1979, डेल जोरजेनसन 1980ए जोर्जेनसन 1990, डेनियल स्लेसनीक 1998) जबकि दूसरों ने इसे अन्य सूचनात्मक निवे ाों से मिलाया है (देखें आगस डीटन और जान म्यूलवाउर 1980, एटकिन्सेन और फ्रांकायस बौराजयूजनन 1982, 1987, फि ार 1987, 1990, पोल्लक 1991, डीटन 1995)[29]। दूसरों ने प्र नाबलियों का प्रयोग करने की कोि ा ा की है और सापेक्ष कल्याण के बारे में प्र नों के लोगों के उत्तरो में नियमितताएं ढंढने की चेश्टा की है (देखें, उदाहरणार्थ, ऐरी कैपटेयन और बर्नाड एम एस वान प्राग 1976)।

जीवन स्थितियों में महत्वपूर्ण तत्व देखने और जीवन की किस्म पर निश्कर्श निकालने और उस आधार पर तुलनात्मक जीवन स्तर देखने के बारे में प्रबुद्ध रचनाएं प्राप्त हैं, वास्तव में इस क्षेत्र में स्केंडिनेवियन अध्ययनों की एक सुस्थापित परंपरा है (देखें उदाहरणार्थ अलारडट 1981 और राबर्ट इश्रिकसम और रूने अवर्ग 1987)। मूल जरूरतों और उनकी पूर्ति पर साहित्य ने तुलनात्मक कमियों को समझने के लिए भी एक अनुभवसिद्ध पहुंच उपलब्ध कराई है [30]। इसके अलावा मकबूल – उल – हम (1995) के बौद्धिक नेतृत्व में यूनाइटेड ने ान्स विकास प्रोग्राम ने जीवन स्थितियों के अवलोकित तत्वों पर आधारित तुलनाएं बनाने के लिए सूचनात्मक विस्तृति के वि ोश प्रकार का योजनाबद्ध प्रयोग किया है। (यू एन डी पी मानव विकास रिर्पोटों में वर्णित)[31]

यह बहुत आसान है कि इन प्रणाली विज्ञानों में से प्रत्येक में त्रुटियां निकाली जाएं और अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं के संबंधित मापों की आलोचना की जाए। लेकिन इन रचनाओं से उत्पन्न अनुभवसिद्ध सूचना के दूरगामी प्रयोगों में कल्याण आर्थिक हित के बारे में कोई भाक नहीं हो सकता। उन्होंने व्यक्तिगत लाभों और उनके अनुभवसिद्ध सह संबंधितों के बारे में हमारी समझदारी का पर्याप्त व्यापक बनाया है। इन प्रणाली विज्ञानों में से प्रत्येक की स्पश्ट रूप से कुछ सीमाएं हैं और कुछ खूबियां तथा हमारी अपनी अपनी प्राथमिकताओं पर निर्भर करते हुए उनके सापेक्ष गुणों के बारे में हमारे मूल्यांकन में भिन्नता होगी। मैंने किसी अवसर पर किसी और स्थान पर (और इस लैक्चर के आरंभ में भी संक्षिप्त रूप से कहा था) क्षमताओं के मूल्यांकन पर आधारित आं ाक तुलनाओं के पक्ष में तर्क दिया था [32] लेकिन उस वि ाश्ट विशय पर (जिस पर दूसरे लोग भिन्न दृश्टिकोण रख सकते हैं), मैं यहां सामान्य विशय पर अधिक बल देना चाहता हूँ कि इन प्रवर्त्तक, अनुभवसिद्ध रचनाओं के माध्यम से व्यावहारिक कल्याण अर्थ ाास्त्र और सामाजिक वरण की संभावनाएं बहुत अधिक विस्तृत हो गई हैं।

---

28 इस पर देखें सेन (1970 क, ग, 1985 ख, 1992 क, 1999 के, 1999 ख)

29 स्लेसनीक (1998) भी देखें।

30 मूल जस्रत पहुंच की एक अच्छी भूमिका पाल स्ट्रीटन (1981) में पाई जा सकती है। देखें हरमा एडलमैन (1975) धर्मधई (1977) जेम्स पी ग्रांट (1978), मौरिस डी मौरिस (1979) चिचिलनीस्की (1980) नानक ककवानी (1981, 1984) पाल स्ट्रीटन (1984) फ्रांसेस स्टीवर्ट (1985), राबर्ट गोर्डन (1988) और एलिन हैमलिन और फिलिप पेटिट (1989) दूसरे योगदानों के साथ। न्यूनतम जरूरतों की पूर्ति पर ध्यान देने की पीगो (1920) में देखा जा सकता है।

31 उदाहरणार्थ देखें यू एन विकास कार्यक्रम (1990) और बाद की वार्शिक मानव विकास रिर्पोटें। देखें सेन (1973 ख, 1985 क), एडलमैन (1975) ग्रांट (1978) मौरिस (1979), स्ट्रीटन (1981) देसाई (1995) और आनन्द और सेन (1997) संबंधित विशयों पर।

32 वि ोशतः देखें सेन (1992 क)

वास्तव में उनके विभेदों के बावजूद वे सूचनात्मक विस्तृत के समग्र पैटर्न में सामान्य रूप से फिट होते हैं जिसकी ओर सामाजिक वरण सिद्धांत में आधुनिक वि लेशणात्मक कार्य में जोरदार संकेत दिया है। हाल ही के साहित्य में कल्याण अर्थ ाास्त्र और सामाजिक वरण में खोजी गई वि लेशणात्मक प्रणालियां ऐरेवियन माडल में प्रणालियों से अधिक व्यापक हैं और क्रम ाः कम कठोर ओर कम ''असंभव'' है जिन पर देखें सेन 1970 क, 1977 ग)[33]

वे वि लेशणात्मक रूप से काफी सामान्य हैं और विभिन्न अनुभवसिद्ध व्याख्याओं को आने देते हैं और सामाजिक वरण के लिए वैकल्पिक सूचनात्मक आधारों की अनुमति देते हैं। यहां जिन विभिन्न अनुभवसिद्ध प्रणाली विज्ञानों पर विचार हुआ है उन्हें इस अधिक व्यापक वि लेशणात्मक संद र्भ में देखा जा सकता है। ''उच्च सिद्धांत'' में संचलन इस रूप में, ''व्यावहारिक अर्थ ाास्त्र'' में प्रगतियों से निकट रूप से जुड़ा हुआ है। रचनात्मक संभावनाओं की सतत खोज के कारण – वि लेशणात्मक और व्यावहारिक स्तरों पर – कुछ धुएं को हटाने में सहायता मिली है जो पहले सामाजिक वरण और कल्याण अर्थ ाास्त्र के साथ संबद्ध था।

IX गरीबी और अकाल

सूचना की विभिन्नता जिस पर सामाजिक कल्याण वि लेशण आकृश्ट हो सकता है उसे गरीबी के अध्ययन द्वारा अच्छी तरह स्पश्ट किया जा सकता है। गरीबी को प्रारूपी रूप से आय की कमी के रूप में देखा जाता है और परंपरागत रूप से इसे गरीबी रेखा आय से नीचे लोगों की संख्या गिनकर ही मापा जाता है। इसे कई बार सिर गिनती उपाय कहते हैं। इस पहुंच की समीक्षा से दो भिन्न प्रकार के प्र न उत्पन्न होते हैं, पहला, क्या गरीबी को कम आय के रूप में पर्याप्त ढंग से देखा जा सकता है? दूसरा चाहे यदि गरीबी को कम आय के रूप में देखा जाता है तो क्या किसी समाज की कुल गरीबी सिर गिनती मापने के इंडेक्स द्वारा ठीक ढंग से दिखाई जा सकती है?।

मैं इन प्र नों को बारी बारी लेता हूँ। क्या व्यक्ति की आय की समाज द्वारा दी गई गरीबी – रेखा आय के साथ तुलना करने पर हम व्यक्ति की गरीबी की पर्याप्त निदान प्राप्त करते हैं? उस व्यक्ति के बारे में क्या कहेंगे जिसकी आय गरीबी – रेखा से काफी ऊपर है लेकिन जिसे कोई महंगी बीमारी हो गई है (जिसके लिए मान लें किडनी डायलेसिस की जरूरत है)? क्या वंचन अन्तः न्यूनतम रूप से स्वीकार्य जीवन व्यतीत करने के अवसर का अभाव नहीं है, जिसे कई लिहाजों से प्रभावित किया जा सकता है, जिसमें बे ाक व्यक्तिगत आय भाामिल है, लेकिन भौतिक और पर्यावरणीय वि ोशताएं भी और दूसरी चर (जैसे चिकित्सा और अन्य सुविधाओं की उपलब्धता और लागतें)? ऐसे अभ्यास के पीछे प्रेरणा निकट रूप से गरीबी को कुछ आधारभूत क्षमताओं गम्भीर कमी के रूप में देखना है। यह वैकल्पिक पहुंच गरीबी को उन निदानों से कुछ भिन्न निदानों की ओर ले जाती है जो वि ाुद्ध आय–आधारित वि लेशण ही उत्पन्न कर सकता है।[34]

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि कई संदर्भों में आय की कमी बहुत महत्वपूर्ण हो सकती है क्योंकि बाजार अर्थव्यवस्था में एक व्यक्ति को जो अवसर प्राप्त हैं वे उसकी वास्तविक आय के स्तर से गम्भीर रूप से बाधित हो सकते हैं। तथापि विभिन्न संभाव्यताओं आय के ''बदलाव'' से विभिन्नताएं उत्पन्न होती हैं जिनसे आय के ''बदलाव' से न्यूनतम स्वीकार्य जीवन जीने की क्षमता उत्पन्न होती है और यदि यही वो हमारे लिए महत्व रखता है तो काफी अच्छा कारण हो सकता है कि आय गरीबी से परे देखा जाए। विभिन्नात के कम से कम चार भिन्न स्रोत हैं; (1) वैयक्तिक विषमता (उदाहरणार्थ बीमारी के प्रति प्रवणता, (2)

---

33 ''क्रियान्वयन'' पर साहित्य व्यावहारिक अनुप्रयोग की दि ाा में बढ़ा है, अन्तर्निहित विभिन्न विशयों में से कुछ के वि लेशण के लिए । देखें लेफण्ट (1979), मस्कन (1985), माउलिन (1995), सूजूमूरा(1997), मस्कन और टोपन स्जोस्ट्राम (1999)

34 देखें सेन (1980, 1983 ख, 1985 के, 1992 क) काकवानी (1984) नुसबाऊम (1988) डरेज और सेन (1989, 1995) ग्रिफन और नाइट (1990) इफ्तखार हुसैन (1990) स्ा ोकाअर्ट और ऊटेजेम (1990) नुसूबाऊम और सेन (1993) आनन्द और सेन (1997), फास्टर और सेन (1997) दूसरे योगदानों में।

पर्यावरणीय विभिन्नताएं (उदाहरणार्थ, किसी तूफान अभिमुख बाड़ प्रवण क्षेत्र में रहना, (3) सामाजिक वातावरण में विभिन्नताएं अपराध की व्यापकता या रोग विज्ञान रोग वाहक और (4) वि ोष समाजों में उपभोग के परम्पारगत पैटर्न से सम्बद्ध सापेक्ष वंचन (उदाहरणार्थ किसी अमीर समाज में अपेक्षाकृत गरीब होना जिससे पूर्ण क्षमता की कमी हो जाती है कि समाज के जीवन में भाग ले सके।[35]

इस प्रकार, इसलिए यह महत्वपूर्ण जरूरत है कि गरीबी वि लेषण में आय सूचना से परे जाया जाए, वि ोषतः गरीबी को क्षमता वंचन के रूप में देखा जाए। तथापि (जैसाकि पहले चर्चा की गई थी) गरीबी वि लेषण के लिए सूचनात्मक आधार के वरण को प्रयोजनात्मक विचारों वि ोषतः सूचनात्म्क अपलब्धता अलग नहीं किया जा सकता। ऐसी संभावना नहीं है कि आय वंचन के रूप में गरीबी के संद ा को गरीबी पर अनुभवसिद्ध साहित्य से छोड़ा जा सकता है तब भी जबकि उस संद ा की सीमाएं बिलकुल स्पष्ट हैं। वास्तव में बहुत से संदर्भों में आय सूचना के इस्तेमाल का काम–चलाऊ तरीका गम्भीर वंचन के अध्ययन के लिए अति तत्काल पहुंच उपलब्ध करा सकता है।[36]

उदाहरणार्थ, अकाल के उत्पादक को बहुधा आबादी के एक तबके की वास्तविक आमदनियों में पर्याप्त कमी को सही रूप में देखा जाता है, जिसके कारण भुखमरी और मौतें होती हैं (इस पर देखें सेन 1976 घ, 1981)।[37] किसी अकाल की जांच के लिए आय कमाने और क्रय ाक्ति के गतिक वास्तव में अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। इस पहुंच में, विभिन्न समूहों की अपनी आय के निर्धारण पर आकस्मिक प्रभावों का अध्ययन केन्द्रीय भूमिका निभाता है, उसका विरोध कृषि उत्पाद और खाद्यान्न आपूर्ति पर एकान्तर फोकस से होता है, जो इस विशय पर साहित्य में बहुदा पाया जाता है।

खाद्यान्न सप्लाई अधिकारों (जिससे आय, सप्लाई और परिणामी सापेक्ष कीमतें भाामिल हैं) तक सूचनात्मक फोकस में तबदीली महत्वपूर्ण अन्तर उत्पन्न कर सकती है, क्योंकि अकाल बिना बड़ी गिरावट – संभवतः किसी भी कमी के बिना खाद्यान्न उत्पाद या सप्लाई की गिरावट के बिना घटित हो जाते हैं[38]। यदि उदाहरण के रूप में, ग्रामीण मजदूरी श्रमिकों की आय या सेवा उपलब्धकर्ताओं या कारीगर की आय बेरोजगारी के कारण या वास्तविक मजदूरी में गिरावट के माध्यम से या संबंधित सेवाओं या क्राफ्ट उत्पादों के लिए मांग की कमी आ जाती है तो प्रभावित समूहों को भूखे मरना होगा भले ही अर्थव्यवस्था में समग्र खाद्यान्न सप्लाई कम नहीं हुई है। भुखमरी घटित होती है जब कुछ लोग खाद्यान्न की पर्याप्त मात्रा पर खरीद या खाद्यान्न

---

35 इस पर देखें सेन (1922 क) और फ़ास्टर और सेन (1997)। अंतिम चिन्ता कि एक सापेक्ष आय का वंचन से एक मूल क्षमता का पूर्ण वंचन हो सकता है। इस पर सबसे पहले आदमस्थित (1976) ने चर्चा की थी। आदमस्मिथ का दावा था कि ''आव यक माल'' (और तदनुसार मूल वंचन को रोकने के लिए न्यूनतम आपेक्षित आय) की विभिन्न समाजों के लिए भिन्न प्रकार से परिभाषा की जाए और गरीबी–रेखा आय के एक प्राचलिक चर का प्रयोग करने की सामान्य पहुंच का भी सुझाव देता है। विभिन्न व्यक्तियों कि भिन्न आय को परावर्तित करने के लिए ऐसी विभिन्नता का प्रयोग किया जाता है। (जिसमें उदाहरणार्थ ाामिल है बीमारी के प्रति अभिमुखता) इन मामलों पर देखें डीरन और म्यूलबाडर (1980, 1986), जोर्गनसन (1990), पोलाक (1991), डीटन (1995) और स्लेसनीक (1998) अन्य योगदानों के बीच। कुछ स्थितिओं में, गरीबी की परिभाषा कि इसमें आय प्राचलिक रूप से निर्धारित गरीबी–रेखा से नीचे होती है। गरीबी के चरित्रचित्रण प्राचलिक विभिन्नताओं को अपेक्षित आय के साथ जोड़ा जाता है)

36 इन विषयों की फिलिप वैन पेरीज़्स ने बारीकी से जांच की है।

37 संबंधित मामलों पर देखें मोहिदीन आलयगीर (1980), देवेलियन (1987), ड्रेज और सेन (1989, 1990), ज़ेफरी कोल्स और हैम्मण्ड (1995), ओसमानी (1995) और पीटर स्वीडबर्ग (1999)।

38 जैसाकि अनुभव सिद्ध अध्ययनों में बताया गया है कुछ वास्तविक अकाल घटित हुए है जिसमें खाद्यान्न की बहुत थोड़ी या ाून्य गिरावट थी (जैसाकि 1973 का बंगाल अकाल, 1993 का एथोपिया अकाल या 1974 का बंगलादेश अकाल) जबकि इसी अकाल खाद्यान्न उत्पाद की गिरावट से बहुत प्रभावित हुए हैं (इस पर देखें सेन 1981)।

उत्पादन के माध्यम अपना एक स्थापित नहीं कर पाते और अर्थव्यवस्था में, बहुत से प्रभावों में खाद्यान्न सप्लाई एक प्रभाव है जिससे लोगों के अपने अपने समूहों के हक का निर्धारण किया जाता है। इस प्रकार एक आय–संवेदी हक पहुंच उसकी तुलना में अकालों की बेहतर व्याख्या दे सकते हैं जिसे एक एकांतिक उत्पादन – प्रवण दृश्टिकोण के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है। यह भुखमरी और भूख के उपचार के लिए एक प्रभावी पहुंच करा सकती है (वि ोशतः इस पर देखें ड्रेज और सेन, 1989)।

समस्या की प्रकृति वि ोश ''स्थान'' की पहचान करने का रूझान रखती है जिसपर वि लेशण को संकेन्द्रित किया जाना है। यह सच बना रहता है कि अकालों और कश्टों के सही पैटर्न की व्याख्या करने में आय आधारित वि लेशण को आयों को पोशण में तबदील करने की सूचना से परिपूरित करके अतिरिक्त समझ प्राप्त कर सकते हैं जो विभिन्न दूसरे प्रभावों पर जैसे चयापचयी दरें, बीमारी के लिए प्रवणता, भारीर आकार आदि आधारित होगी[39]। पोशण की विफलता, रुग्णता मर्त्यता की घटना की जांच के लिए ये मामले निस्संदेह महत्वपूर्ण हैं। तथापि अकालों के घटन और उदभावन के सामान्य वि लेशण में, जो बड़े समूहों को प्रभावित करते हैं, ये अतिरिक्त मामले कम महत्व के हैं। जबकि मैं यहां अकाल साहित्य में आगे नहीं जाना चाहता, मैं इस बात पर बल देना चाहता चाहूंगा कि अकाल वि लेशण की सूचनात्मक मांगे आय वंचन को एक महत्वपूर्ण स्थान देती है जो क्षमता तुलनाओं पर आधारित अधिक सूक्ष्म और सुविज्ञ विभिन्नताओं की तुलना में अधिक तात्कालिकता और व्यवहार्यता रखती है। इस पर देखें सेन (1981) और ड्रेज और सेन (1989)।

अब मैं दूसरे प्र न पर आता हूँ। गरीबी मापने का अत्यधिक आम और परम्परागत पैमाना सिरों की गिनती करने का रूझान रहा है। लेकिन इससे अव य फर्क पड़ेगा कि गरीब वि ोश रूप से गरीबी रेखा के कितने नीचे हैं और इसके अलावा बंचक पर सामाजिक डाटा को एक साथ जोड़ने की जरूरत है ताकि समस्त गरीबी के सूचनात्मक और उपयोज्य मापों तक पहुंचा जा सके। यह सामाजिक समस्या है और स्वयंसिद्धों का वास्तव में प्रस्तावित किया जा सकता है जो इस रचनात्मक अभ्यास से हमारी वितरण की चिन्ताओं को ग्रहण करने की चेश्टा कर सकें। इस पर देखें सेन (1976 ख)[40]

---

[39] एक और महत्वपूर्ण विशय है परिवार के भीतर खाद्यान्न का वितरण, जो परिवार की आय को छोड़कर विभिन्न तत्वों से प्रभावित हो सकता है। इस संदर्भ में लिंग असमानता और बच्चों तथा वृद्धों का व्यावहार बहुत महत्वपूर्ण है। इन दि ाओं में हक का वि लेशण बढ़ाया जा सकता है और इसके लिए परिवार की आय से अलग प्रथाओं और अन्तः परिवार के बंटबारे में जाया जा सकता है। इन मामलों के बारे में देखें सेन (1983 क, 1984ए 1990) वागां (1987) ड्रेज और सेन (1989) बारबारा हैरिस (1990) बीना अग्रवाल (1994) नेन्सी फोल्बर (1995) और कानबूर (1995) दूसरे योगदानों सहित।

[40] तथा कथित ''गरीबी का सेन उपाय'' वास्तव में एन्थनी एक भोरोक (1995) द्वारा प्रस्तावित एक महत्वपूर्ण लेकिन सरल प्रबुद्ध विभिन्नता से सुधारा जा सकता है। मैं मानता हूँ कि मूल ''सेन हन्डेक्स'' पर मैं ''सेन का भोरोक उपाय'' को तरजीह दे रहा हूँ।

कुछ वितरण संवेदी स्वयंसिद्ध ढंग से हाल ही के सामाजिक साहित्य में प्राप्त किए गये हैं और विभिन्न वैकल्पिक प्रस्तावों का वि लेशण किया गया है। जबकि मैं यहां इन उपायों के तुलनात्मक मूल्यांकन में नहीं जाना चाहूंगा (न ही स्वयंसिद्ध जरूरतों में जिनका प्रयोग उनका अन्तर जानने के लिए किया जा सकता है।)

किसी दूसरे स्थान पर मैंने इस मामले पर जैम्स फोस्टर के साथ मिलकर चर्चा की है। (फास्टर 1997)[41]

X तुलनात्मक बंचन और लिंग असमानता

एक स्तर पर गरीबों को उससे उत्पन्न कश्ट से अलग नहीं किया जा सकता और इस अर्थ में, उपयोगिता के उत्कृश्ट संदर्भ को भी इस वि लेशण में भी लिया जा सकता है। तथापि मानसिक अभिरुचियों का आघात वर्धन, जिसकी मैंने पहले चर्चा की थी, बहुत मामलों में वंचन के विस्तार को छिपा सकता है या उसे छादित कर सकता है। एक दरिद्र किसान जो अपने जीवन में कुछ खु ाी लाने की व्यवस्था करता है उसे उसकी मानसिक उपलब्धि के आधार पर ग़ैर गरीब नहीं माना जाना चाहिए।

परम्परागत असमान समाजों में महिलाओं की लिंग असमानता और वंचन के बारे में व्यवहार करने पर यह अनुकूलनीय वि ोश महत्वपूर्ण हो सकती है। ऐसा आंि ाक रूप से इसलिए है क्योंकि परिवार जीवन की सम्बद्धता में संदर्भों की भूमिका निर्णायक होती है और परिवार जीवन की प्रथा यह है कि जिनसे खराब व्यवहार होता है, उसमें से साथी बनाने में इनाम का रुझान होता है। महिलाएं पुरुशों की तुलना में बहुत बार बहुत कठिन काम करती है और फिर भी संद र्ा है कि यहां ठीक न होने वाली असमानता समाज में गायब होगी जिसमें मानक चुपचाप प्रभुत्व रखते हैं[42]। इस प्रकार की असमानता और वंचन, इन हालात के अधीन, असंतोश के मानसिक मीटरिक पैमाने में पर्याप्त रूप से नहीं उभरेगा।

सामाजिक रूप से उत्पन्न संतोश और भाांति की भावना रुग्णता और बीमारी के संद र्ा को भी प्रभावित करेगी, जब बहुत वर्श पहले जब 1994 में बंगाल अकाल के बाद मैं एक अकाल–संबंधित अध्ययन पर काम कर रहा था, मैं इस अद्भुत तथ्य से बिलकुल अचंभित हो गया कि जिन विधवा स्त्रियों का सर्वेक्षण किया गया तो उनमें से किसी ने भी ''खराब स्वास्थ्य''

---

41 जैम्स फास्टर ने गरीबी साहित्य में बहुत बड़ा योगदान दिया है देखें उदाहरणार्थ फास्टर (1984) और फास्टर एट एल (1984) और फास्टर और भोरोकस (1988)। गरीबी के एक समाकलित उपाय के बारे में कुछ बड़े मामलों की चर्चा के लिए देखें आनन्द (1977, 1987) ब्लैर्कोबाई और डोनाल्डसन (1978, 1980) कानबूर (1984) एटकिन्सन (1987, 1989), क्रस्टीयन सीडल (1988), सत्य चक्रवर्ती (1990) कामीला डागुप और मि ले जेंगा (1990), रेवालियन (1994), फ्रेंक कोवेल (1995) और भोरोक्स (1995) और दूसरों के बीच। (फास्टर और सेन, 1997 में बड़े साहित्य की व्यापक ग्रंथसूची है)। एक महत्वपूर्ण विशय जिस पर चर्चा की जरूरत है वह है ''उपघटन'' की सीमाएं (और ''उपसमूह संगति'' की कमजोर जरूरतें, जिस पर भी देखें भोरोक्स 1984)। फास्टर (1984) उपघटन के पक्ष में दलीलें देता है (जैसा कि आनन्द ने किया 1977, 1983) जबकि सेन (1973 क, 1977 ग) इसके विरुद्ध तर्क प्रस्तुत रिता है। फास्अर और सेन (1997) में एक गंभीर प्रसास है जिसमें अपघटन और उसमूह संगति के पक्ष और विपक्ष पर चर्चा की गई।

42 ठसपर देखें सेन (1984, 1990, 1993 ग) और उसमें वर्णित सहित्य।

की ि ाकायत नहीं की जबकि विधुर पुरुशों ने उसके बारे में बहुत ि ाकायतें की (सेन 1985 क परि ि ाश्ट ख)। इसी प्रकार भारत में अर्न्तराज्यों की तुलनाओं में यह बात सामने आती है कि जिन राज्यों में ि ाक्षा और स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं की बहुत कम व्यवस्था की जाती है वे सुस्पश्ट रुग्णता के निम्नतम स्तरों की प्रारूपी रिर्पोट देते हैं जबकि जिन राज्य में स्कूल ि ाक्षा और स्वास्थ्य देखभाल की अच्छी व्यवस्था होती है वे बीमारी के उच्चतर स्वबोध की सूचना देते हैं (उच्चतम रुग्णता रिर्पोट ऐसे राज्यों जैसे केरल से हैं जिनके लिए सर्वोत्तम व्यवथ्या की गई है)[43] उत्कृश्ट उपयोगिता की मुख्य आधार मानसिक प्रतिक्रियाएं वंचन के वि लेशण के लिए बहुत सदोश आधार हो सकते हैं।

इस प्रकार गरीबी और असमानता को समझने के लिए यह मजबूत मामला है कि वास्तविक वंचन को देखा जाए, वंचन की मानसिक प्रतिक्रियाओं को ही नहीं। लिंग असमानता और कुपोशण के रूप में महिलाओं के वंचन, डॉक्टरी रूप से बताई गयी रुग्णता, प्रेक्षित अपढ़ता और अप्रत्याि ात उच्च मर्त्यता (ाारीरिक रूप से समंजित प्रत्या ााओं की तुलना में) के बारे में हाल ही में जांचे की गईं हैं।[44] ऐसे अन्तः व्यक्तिगत तुलनाएं लिंगों के बीच गरीबी और असमानता के अध्ययनों का महत्वपूर्ण आधार हो सकती हैं। कल्याण अर्थ ाास्त्र और सामाजिक वरण (सूचनात्मक बाधाओं के हटाने से बढ़ाया गया जो इस प्रकार के डाटा के प्रयोग को वर्जित करता है) के व्यापक ढांचे के अतंर्गत उन्हें लिया जा सकता है।

XI उदार विरोधभास

ठस लैक्चर में इस परिचर्चा को भाामिल किया गया है कि सामाजिक वरण में असंभावना परिणामों का क्यों और कैसे सूचनात्मक विस्तार के माध्यम से नियंत्रित किया जा सकता हैं अब तक जिस सूचनात्मक विस्तार की चर्चा की गई है वह मुख्यतः अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं के प्रयोग से संबंधित था । लेकिन यह जरूरी नहीं कि विस्तार करने का यह ही एक तरीका है जिसकी सामाज में गतिरोध समाप्त करने की जरूरत है। उदाहरणार्थ एक असंभावना प्रमेय पर विचार करें जिसे कई बार ''उदार विरोधाभास'' या ''पेरी ाीयन उदार की असंभावना'' का नाम दिया गया है (सेन 1970 क, ख 1976 ग)। यह प्रमेय आजादी के लिए अन्यंत न्यूनतम मांग को भी पूरा करने में असंभावना दिखाती है जब इसे पेरेटो दक्षता के साथ भाामिल किया जाता है[45]।

---

[43] इस समस्या के अन्तर्गत आने वाले प्रणाली विज्ञान विशय में ''स्थिति निर्धारित तटस्थता'' को लिया गया है – जो एक दत्त स्थिति से प्रेक्षणीय रूप से तटस्थ है लेकिन अन्तर्स्थिति निर्धारण तुलनाओं में भाायद न टिक सके। इस विरोध और उसके दूरगामी सुसंगति पर सेन (1993 क) में चर्चा की गई है।

[44] ''गुम ुदा महिलाओं'' पर साहित्य ऐसे अनुभवसिद्ध वि लेशण का एक उदाहरण है (कुछ समाजों में असाधारण रूप से उच्च स्त्री मर्म्यता दरों के अभाव में महिलाओं की प्रत्याि ात संख्या की तुलना में), इसपर देखें सेन (1984, 1992 ग) वागां (1987), डेज और सेन (1989, 1990) एन्सली को एल 1991, और स्टीफन क्लेसन 1994, जोसलीयन कायंच और सेन (1983), हैरिस (1990), रवि कानूबर और लारेंस हडडाड (1990), अग्रवाल (1994), फोल्बरे (1994), नुस्सबाउम और ग्लोवर (1995), दूसरी रचनाओं में।

[45] यहां भाामिल किए गए असंभावना परिणाम के ''स्रोत'' में कुछ वि लेश्णात्मक रुचि भी है, वि ोशतः जब से ''पैरेटो दक्षता'' और ''न्यूनतम आजादी'' दोनो का एक रूपी व्यक्तियों के वैसे ही सेट के रूप में वि ोश उल्लेख किया गया है। इस पर देखें (1976 ग, 1992 ख)।

चूंकि आधुनिक साहित्य में आजादी की अतंर्वस्तु पर कुछ परिचर्चाएं हुई हैं (देखें, उदाहरणार्थ नोजिक 1994, पीटर गार्डेन फोर्स, 1981, रावर्ट सुगडेन 1981, 1985, 1993, हिल्लेल स्टीनर 1940, गायर्टनेर 1992, डेब, 1994, मार्क फ्लयूबेमी और गार्यटनेर 1996, पटनायक 1996, सूजूमूरा 1996) भाायद एक तुरन्त व्याख्यात्मक टिप्पणी उपयोग होगी। आजादी के विभिन्न पहलू होते हैं, जिसमें दो भिन्न भिन्न तत्व भाामिल हैं (1) यह हमें प्राप्त करने में सहायता देगी जो हम अपने अपने निजी क्षेत्रों में प्राप्त करना पसन्द करते हैं, उदाहरणार्थ व्यक्तिगत जीवन में (यह इसका ''अवसर पहलू'' है) और (2) यह निजी क्षेत्र में हमें पसन्दों का इंचार्ज रहने देता है इसमें कोई बात नहीं कि हमने क्या पाया है या क्या प्राप्त नहीं किया है (यह इसका ''प्रक्रम पहलू'' है)।

सामाजिक वरण के सिद्धांत में, आजादी का प्रतिपादन मुख्यतः पहले से संबंधित रहा है, यानी अवसर पहलू से। पेरेटो सिद्धांत और आजादी के अवसर पहलू के बीच ससंभावित विवाद को दिखाना, यह भाायद पर्याप्त होगा (जिस पर सेन 1970 क, ख) सकेंद्रित था लेकिन अवसर पहलू पर अनन्य संकेन्द्रन आजादी की मांग की पर्याप्त समझ उपलब्ध नहीं करा सकता (इस बारे में सुगडेन 1981, 1993 और गायर्टनेर 1992 नि चत रूप से ठीक थे कि मानक सामाजिक वरण सिद्धांत में अवसर केन्द्रित प्रतिपादन की पर्याप्तता को उन्होंने रदद कर दिया)[46]। किन्तु ससमाजिक वरण सिद्धांत द्वारा भी आजादी के प्रक्रम पहलू को उपयुक्त पुनःलक्षण वर्णन के माध्यम से और वि ोशता पर्याप्त अवसरों के अलावा मूल्य निर्धारण सम्यक प्रक्रम के माध्यम से स्वीकार कराया जा सकता है। (इस पर देखें सेन 1982 ख, 1997 क, 1999 ख, स्टिग कांगेर, 1985, डेब 1994 हैम्मण्ड, 1997, सूजूमूरा 1996, मार्टिन वान हीस 1996)।

यह भी महत्वपूर्ण है कि आजादी के प्रक्रम पहलू पर ी एान्तिक संकेद्रण की विरोधी संकीर्णता से बचा जाए क्योंकि कुछ आधुनिक लेखकों ने ऐसा करने को तरजीह दी है। प्रक्रम बहुत महत्वपूर्ण है लेकिन इससे अवसर पहलू की सुसंगति समाप्त नहीं की जा सकती, इसे भी महत्व दिया जाना चाहिए। किसी व्यक्ति के निजी जीवन में आजादी प्राप्त करने की प्रभावकारिता के महत्व को बहुत लंबे समय से महत्वपूर्ण होने के कारण मान्यतः दी गई – ऐसे भाश्यकारों द्वारा भी जो प्रक्रमों से अत्यधिक संबंधित हैं – स्टूअर्ट मिल (1859) से लेकर फ्रैंक नाइट (1947), फ्रइडरिक ए हैयक (1960) और बुकानन (1986) तक। निश्कर्शों की प्रभावकारिता के विरुद्ध प्रक्रम औचित्य

[46] तथापि पेरे ियन उदार की अंसभवता, आजादी के प्रक्रम पहलू पर संकेन्द्रण द्वारा ही हल नहीं हो जाती जिस पर देखें फ्रेडरिक ब्रेयर (1979) ब्रेयर और गार्डनर (1980) सेन 1983 ख, वासू (1984) गायर्टनेर (1992) डेब (1994) बिनमोर (1996) म्यूलेर (1996) पटटनायक (1996) और सूजूमूरा (1996)।

मापने में पे ा आने वाली कठिनाइयों को, प्रक्रम पहलू पर एकान्तिक संकेन्द्रण के माध्यम से आजादी के अवसर पहलू की मात्र उपेक्षा करके, दूर नहीं किया जा सकता[47]।

पेरेि ायन उदार के विवाद को, वि ोशतः, किस प्रकार हल किया जाएगा? साहित्य में इस घर्शण का निपटान करने के लिए विभिन्न तरीकों की खोज की गई है[48]। किन्तु यह देखना महत्वपूर्ण है कि ऐरो के असंभावना परिणाम की तरह न होते हुए, उदार विरोधाभास को अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं के माध्यम से संतोश जनक ढंग से हल नहीं किया जा सकता। वास्तव में न तो आजादी के दावों और पेरेटो दक्षता के दावों को अन्तः व्यक्तिगत तुलना पर सार्थक ढंग से अनिि चत होने की जरूरत है। किसी व्यक्ति के निजी क्षेत्र के ऊपर किसी के दावे का बल उस पसन्द की व्यक्तिगत प्रकृति में स्थित होता है – न कि एक वि ोश व्यक्ति के निजी के ऊपर विभिन्न व्यक्तियों की पसन्दों की सापेक्ष तीव्रता। पेरेटो दक्षता जोड़े वार पसन्द के ऊपर विभिन्न व्यक्तियों की पसन्दों के सामंजस्य पर निर्भर करती है – न कि उन पसन्दों की तुलनात्मक भाक्ति पर।

बल्कि, इस समस्य का समाधान कहीं और है, वि ोशतः यह जरूरी है कि देखा जाए कि इन दावों में से प्रत्येक दूसरे के महत्व द्वारा सीमित है एक बार जब यह मान लिया जाए कि इनका एक दूसरे के साथ संभावित विवाद हो सकता है (वास्तव में उदार विरोधाभास का मुख्य विशय यह था कि संभावित विवाद की सुस्पश्ट पहचान की जाए)। किसी व्यक्ति के निजी क्षेत्र में प्रभावी आजादी के महत्व की मान्यता (ठीक ठीक वि ोश पसन्दों पर) किसी भी जोड़े के ऊपर (सबकी पसन्दों पर भले वो किसी के निजी क्षेत्र में है या नहीं) पेरेि ायन सर्वसम्मति के सम्बद्धता की स्वीकृति के साथ सहअस्तित्व रख सकती है।

इस असंभवता के संतोशजनक समाधान में व्यक्तिगत आजीदी और समग्र इच्छा पूर्ति के बीच स्वीकार्य प्राथमिकताओं का गुण दोश सर्वेक्षण भाामिल होना चाहिए और इस विनिमय के बारे में सूचना के प्रति संवेदी होना चाहिए कि व्यक्ति स्वयं उसे पृश्ठांकित करेंगे। इसके लिए सूचनात्मक समृद्धि जरूरी है (लोगों के राजनीतिक मानों और व्यक्तिगत इच्छाओं को ध्यान में रखते हुए), लेकिन यह समृद्धि उससे कुछ भिन्न प्रकार की है जो कल्याण या समग्र लाभ की अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं से है[49]

---

47 इन विशयों पर देखें हैमण्ड (1997) और सीडल (1975, 1997), ब्रयर (1997) कानगेर (1985) लेवी (1986), चार्ल्स रोली (1963) डेब (1994) सूजूमूरा (1996) और पटटनायक (1997)।

48 उदाहरण के लिए देखें सीडल (1975, 1997) सूजूमूरा (1976 ख, 1983, 1999), गाएरटनेर और लोरेन्ज़ क्रूमार (1981, 1983),हैम्मण्ड (1982, 1997), जान रिगलवर्थ (1985), लेवी (1986), और जोनाथन रीले (1987), और दूसरे। एनालाइज और क्रिटिक में ''उदार विरोधाभास'' पर विचार गोश्ठी सितम्बर 1996, सहित बिनमोर (1996), ब्रेयर (1996), बकानन (1996), फ्लेयाबेई और गेअर्टनेर (1996), एन्थनी जेसी और हटमट क्लीमट (1996), क्लीमटर (1996), म्यूलेर (1996), सूजूमूरा (1996) और वान हीसर (1996), मेरी अपने सुझाव सेन (1983 क, 1992 ख, 1996 क) में दिये गए हैं।

49 औपचारिक रूप से इन प्राथमिकताओं को निर्धारित करने के लिए इसक लिए बहुचरण सामाजिक वरण अभ्यास की जरूरत होती है और उसके बाद व्यापक सोि ाल राज्यों में चरण में प्राथमिकताओं के प्रयोग के द्वारा। इन विशयों पर देखें पटटनायक, 1977 सेन 1982 ख, 1992 ख, 1996, 1997 के, सुजूमूरा (1996, 1997)।

XII समापन टिप्पणी

समाजिक वरण सिद्धांत में असंभवता परिणाम – जिनका नेतृत्व ऐरो (1951) की पथप्रद ाक रचना द्वारा किया गया – के बारे में बहुधा कहा गया है कि यह कल्याण अर्थ ाास्त्र सहित सुविवेचित और प्रजातांत्रिक सामाजिक वरण की संभवतः का पूरी तरह ना ा करते हैं (खण्ड **I-III, XI**)। मैंने उस विचार के विरोध में तर्क प्रस्तुत किये हैं। वास्तव में ऐरो की भाक्ति ााली ''असंभवता प्रमेय'' त्याग की बजाए व्यसतता चाहती है। (खण्ड **IV -VIII**)। बे ाक हम इस बात को जरूर जानते हैं कि कई बार लोक तांत्रिक निर्णय असंगतियों की ओर ले जाते हैं। उस सीमा तक, कि यह वास्तविक जगत का तत्व है, इसका अस्तित्व और पहुंच तटस्थ मानयता की बातें हैं। कई स्थितियों में दूसरों की तुलना में असंगतियां अधिक तत्परता से उत्पन्न हो जाती हैं और उनकी स्थितिगत विभेदों की पहचान करना और मतैक्य और संगत निर्णयों के माध्यम से प्रक्रमों के लक्षण वर्णन करना संभव होता है (खण्ड **IV -VIII**)

असंभवता परिणाम नि ि चत रूप से गंभीर अध्ययन के पात्र हैं। बहुधा उनकी पहुंच व्यापक – वास्तव में बहुत महत्वपूर्ण होती है और दैनिक राजनीति के बारे में नहीं होती (जहां हमें असंगतियों का अभ्यास होता है) लेकिन समग्र समाज के लिए सामाजिक कल्याण निर्णय लेने के लिए किसी नि ि चत ढांचे की संभवता पर भी प्र न उठाते हैं। इस प्रकार पहचान की गई असंभवताएं बहुधा असमानता का मानकीय निर्धारण करने के लिए, गरीबी का मूल्यांकन करने के लिए और असहय आतंक और आजादी का उल्लंघन की पहचान के लिए सुव्यवस्थित और योजनाबद्ध ढांचे की सामान्य संभवता का विरोध करते हैं। इन मूल्यांकनों के लिए सुसंगत ढांचा प्राप्त करने के योग्य न होना वास्तव में योजनाबद्ध राजनीति, सामाजिक और आर्थिक निर्णयों क लिए बहुत हानिकारक होगा। अन्याय और अनुपयुक्तता के बारे में बात करना इस इलजाम का सामना किए बिना संभव नहीं होगा कि ये निधान अव य ही मनमाने या बौद्धिक रूप से निरंकु ा है।

किन्तु ये निरानन्द निश्कर्श सूक्ष्म जांच के सामने नहीं ठहर सकते और ऐसे लाभप्रद प्रक्रियाओं की सुस्पश्ट पहचान की जा सकती है जो ऐसे निरा ाावाद का विरोध करते हैं। यह वास्तव में व्यापक रूप से एक अप्रघात लैक्चर था – जिसमें रचनात्मक सामाजिक वरण सिद्धांत की संभवता पर बल दिया गया और असंभवता परिणामों की उत्पादक व्याख्या के लिए तर्क प्रस्तुत किए गए। वास्तव में इन स्पश्टतः नकारात्मक परिणामों को सामाजिक वरण के लिए एक पर्याप्त ढांचे के विकास में मददगार निवे ाों के रूप में देखा जा सकता है क्योंकि एक वि ि ाश्ट सामाजिक वरण प्रक्रिया का स्वयंसिद्ध उद्भव बीच में – और निकट होगा – एक असंभवता एक पहलू पर और अमीरी की परे ाानी दूसरे पहलू पर (देखें खण्ड **V**)

रचनात्मक कल्याण अर्थ ाास्त्र और सामाजिक वरण (और सामाजिक कल्याण का निर्णय लेने में और मानकीय महत्व के साथ व्यावहारिक उपाय निकालने में उनका प्रयोग) की संभावना ऐसे वरण के सूचनात्मक आधार को व्यापक बनाने की जरूरत उत्पन्न करती है। साहित्य में विभिन्न प्रकार की सूचनात्मक समृद्धियों पर विचार किया गया है। इस विस्तार में एक महत्वपूर्ण तत्व है व्यक्तिगत लाभ और कल्याण की अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं का प्रयोग। यह हैरानी की बात नहीं है कि विभिन्न लोगों के जो समाज बनाते हैं, दावों का एक दूसरे के विरुद्ध मूल्यांकन करना होगा। जब तक अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं को हम एक या दूसरे रूप में अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं को किए बिना हम गरीबी, भूख, असमानता या आतंक के बारे में जनता की चिन्ताओं के बल को समझ ही नहीं सकते। इन मामलों पर हमारे अनौपचारिक निर्णय जिस सूचना पर वि वास करते हैं ठीक ठीक वही सूचना है जिसे योजनाबद्ध सामाजिक वरा के औपचारिक वि लेशण में भाामिल करना पड़ेगा और किया जा सकता है। (देखें खण्ड **VII - XI**)

अन्तः व्यक्तिगत तुलनाओं की संभावना के बारे में निरा ाावाद जिसने कल्याण अर्थ ाास्त्र (सामाजिक वरण सिद्धांत में असंभवता के डर को सारभूत रूप से पाला) के लिए ''मृत्यु सूचनाओं'' को भड़काया अन्ततः दो कारणों से भ्रामक था। पहला, इसने ध्यान को सूचना के अन्यंत संकीर्ण आधार तक सीमित रखा और विभिन्न तरीकों की उपेक्षा की जिनमें अन्तः व्यक्तिगत कथन विवेकपूर्ण ढंग से दिये जा सकते हैं और कल्याण निर्णयों और सामाजिक वरण के वि लेशण को समृद्ध बनाने के लिए इस्तेमाल किए जा सकते हैं। मानसिक स्थितियों की तुलनाओं पर अतिसंकेन्द्रण से सूचना का बाहुल्य सामने आ गया जो विभिन्न व्यक्तियों के वास्तविक लाभ और हानियों के बारे में हमें सूचित कर सकता है और जो उनके अर्थपूर्ण कल्याण, आजादी या अवसरों से संबंधित है। दूसरा, निरा ाावाद ऐसी तुलनाओं में बहुत अधिक सूक्ष्मता की मांग पर आधारित था, और इस तथ्य की देखी अनदेखी की जा रही थी कि आंि ाक तुलनाएं भी कल्याण अर्थ ाास्त्र, सामाजिक नीति ाास्त्र और उत्तरदायी राजनीति के सुविवेचित आधार का प्रकाश देने का काम कर सकती हैं[50]।

ऐसी समस्याओं का समाधान सामाजिक वरण सिद्धांत (और अर्मत्य कल्याण अर्थ ाास्त्र) को पुश्ट करने के लिए सहायक होता है। सामान्यतः सूचनात्मक विस्तार एक या दूसरे रूप में, एक कारगर तरीका है जिससे सामाजिक वरण निरा ाावाद को और अंसभवताओं को अलग रखकर नियंत्रित किया जा सकता है और यह सीधे व्यवहार्यता और पहुंच के साथ सचनात्मक उपागमों की ओर ले जाता है। प्रतिपादित स्वयंसिद्धों के बारे में औपचारिक तर्क (उनकी संगति और

---

[50] ।यह दो भिन्न विशय हैं। पहला, एक इश्टतम वरण को उत्पन्न करने के लिए आंि ाक तुलना बहुत कारगार हो सकती है (सेन 1970 क, ग)

छूसरा यदि जब एक इश्टतम विकल्प उत्पन्न नहीं होता तो यह अछांदित विकल्पों के अधिकतम सेट को कम करने में सहायता दे सकता है जिसके लिए अधिक बनाने वाले वरण को सीमित किया जा सकता है (सेन 1973 क, 1993 क, 1997 क)

संबद्धता सहित) और मानों और मानकों (सुसंगति और सत्याभास) की अनौपचारिक तर्क – सामाजिक विज्ञान के लिए अतिमहत्वपूर्ण – के बीच गहरी अनुपूरिकता आधुनिक सासमाजिक वरण सिद्धांत में विकासों के द्वारा पूरी तरह से समझायी गई है।

संदर्भ

''विकास अर्थशास्त्र : लक्ष्यों का पुनर्मूल्यांकन

एडलमैन इसदा– अमेरिकन इकोनॉमिक्स रिव्यु मई 1975

टग्रवाली, बीना– ए फील्ड ऑफ वन्स ओन : जेन्डर एंड लैंड राइटस इन साउथ एशिया–कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस

एज़रमैन, मार्क और अलेकेरोव, फॉंड– वोटिंग आपाटर्स इन दि स्पेस आफ चायस फंक्शन– मैथिमैटिकल सोशिल साइंसिस जून, 1986

आलमगीर मोहिद्दीन– दक्षिणी एशिया में अकाल, बोस्टन

अलेस्केरोव, फाउडरी– ऐरो ढांचे में मतदान माडल केनिथ जे ऐरो, अर्मत्य सेन और कोटोरो सूजूमूरा भाग 1 न्यूयार्कः सेंट मार्टिन प्रैस

अलाइडट, एरिक, नाइलस, फरीस, ऐरिकज़े; गिस्लासन, निलसन, स्टेन स्पारे, बेलिन हेनरी, वांडट, फ्रांटज़ और विस्टी, फोल्मेर, नारमोटिक डेमोक्रेसी, आइडियस, इशुज़ और इंस्टीट्यूशनस इन पालिटिक्स, इकानोमी, एजूकेशन सोशिल एंड कल्चरल अफयरर्स आफ डेनमार्क, फिनलैंड, आइसलैंड, नारवे एंड स्वीडन, कोपेनंहेगन।

आनन्द सुधीर– ''एस्पेक्स आफ पावरटी इन मेलेशिया–मलेशिया में गरीबी के पहलू–मलेशिया में असमता और गरीबी–न्यूयार्क

आनन्द सुधीर और रेवेलियम मार्टिन–''गरीब देशों में मानव विकासः निजी आय और सरकारी सेवाओं की भूमिका पर''

आनन्द सुधीर और अर्मत्य सेन–''मानव विकास और गरीबी की संकल्पनाः एक बहुराष्ट्रिय संदर्श, यूएनडीपी न्यूयार्क

आरनेसन रिचर्ड ''कल्याण के लिए समता और समान अवसर सामाजिक कल्याण के विचार में एक कठिनाई, जर्नल आफ पोलिटीकाल इकानोमी सोशिल चायस एंड इंडिविजुअल वेल्यूज न्यूयार्क

सोशिल चायस एंड इंडिविजुअल वेल्यूज दूसरा संस्करण न्यूयार्क

''दुर्घटना हमदर्दी और सामाजिक वरण की संभावना''–अमेरिकन इकानोमिक रिव्यू

कौशक बासू, प्रशान्त पट्टनायक और काटोरो सूजूमूरा, :वरण कल्याण और विकास अमर्त्य सेन के सम्मान में आक्सफोर्ड

ऐरो केनिथ जे, सेन, सूजूमूरा, कोटाराः सामाजिक वरणः पुनःजांच, न्यूयार्क

एटिंकसन एन्थनी ''असमानता मापने पर''

''सामाजिक न्याय और सार्वजनिक नीति''

ग्रीबी के मापने पर''

ग्रीबी और सामाजिक सुरक्षा''

''योग्यताएं, अनन्य और माल की सप्लाई''

ब्रयर फ्राइरिक और गार्डनेर राय– ''उदार विरोधाभास, गेम संतुलन और गिब्बर्ड इष्टतम''

एटिंक्सन एन्थनी और फ्रांकायस–''आर्थिक स्थिति के लिए योग्यताओं का बहुआयामी वितरण''

लंडन गैक्मेलिन– आय वितरण और जरूरतों में विभेद

बेजकन्ट निक– ''मानक, वरण और पसन्द'', आस्टरिया

बेल्सट्रीनों अलेसेन्डरों– ''गरीबी और कार्य करना''

''समृद्ध समाजों में गरीबी–काम पर एक नोट''

बन्धोपाध्याय तारादास ''तर्क संगतता, पथ आजादी और शाक्ति ढांचा''

बारबेरा सालवोडोर– ''निर्णायक वाटरः ऐरो प्रमेय का एक नया सबूत''

''निर्णायक वाटरः ऐरो प्रमेय का एक सरल सबूत''

बरबेरा सल्वाडोर और सोनेनशीन, हिमूगो एफ़–''यादृच्छिीकृत सामाजिक क्रमण के साथ पसन्द समूहन''

बार्का ई– ''अरस्तू की राजनीति'', लंडन

बासू कौशक– ''सरकार की प्रकटित तरजीहें'', कैम्ब्रिज।

''अधिकार छोड़ने का अधिकार''

''उपलब्धि, क्षमता और कल्याण की संकल्पनाः पण्यों और क्षमताओं की अमर्त्य सेन द्वारा समीक्षा''

बासूकौशक, पट्टनायक, प्रशान्त के सूजूमूरा, कोटारो ''वरण, कल्याण और विकास'' अमर्त्य सेन के सम्मान में अभिनंदन ग्रन्थ।

बाउमोल विलियम– ''कल्याण अर्थशास्त्र और राज्य के सिद्धांत, कैम्ब्रिज

बावेट्टा, सेबेस्टी आनो– ''वैयक्तिक आजादी, नियंत्रण और वरण साहित्य के आजादी''

बैंथिम जर्मी– ''नैतिकता और कानून के सिद्धांतों का एक परिचय'' मारल्स एंड लेजिस्लेशन, लंडन

बगेसन अबराम– ''कल्याण अर्थशास्त्र के कुछ पहलुओं का पुनः प्रतिपादन''

बैज़िमबिन्डर टी और अकेर पी.–''व्यष्टि और समूहवरण में अकर्मकता''

बिनमोर केन– ''समूह तरजीह का एक उदाहरण'', न्यूयार्क

उचित ढंग से श्वेत्वनाः गेम सिद्धांत और सामाजिक संविदा''

''ठीक या मुनासिब''

बनैक डंकन– ''विशेष बहुमत का प्रयोग करते हुए समिति का निर्णय''

''समितियों और चुनाव के सिद्धांत'', लंडन

ब्लैर्कोबाई चार्ल्स– ''गुणांक का दर्जा और कुल आंशिक क्रमण''

ब्लैर्कोबाई, चार्ल्स और डोनल्डसन डेविड– ''सापेक्ष समानता के माप और सामाजिक कल्याण के रूप में उनके अर्थ''

ब्लैर्कोबाई, डोनल्डसन, डेविड और वेमार्क, जान–अन्तः वैयक्तिक तुलनाओं के साथ सामाजिक वरणः एक आरेखीय परिचय'' जर्नल आफ इकानोमिक थियूरी।

ब्लेयर डोगलस; बोंडस, जार्जए; कैली, जैरी, सूजूमूरा, कोटारो–सामूहिक विवेकशीलता के बिना असंभवता प्रमेय''

ब्लेयर डोगलस और पोलोक रार्बट–''सामूहिक विवेकशीलता और तानाशाहीः ऐरो के प्रमेय का क्षेत्र''

''अचक्रीय सामूहिक वरण शासन करना है''

ब्लाऊ जूलियन– ''सामाजिक कल्याण कार्यों का अस्तित्व''

''ऐरा क`प्रमेय का प्रत्यक्ष सबूत''

''अर्ध आदेश और सामूहिक वरण'' जर्नल आफ इकानोमिक थियूरी

ब्लाऊ जूलियन और देब, रजत–''सामाजिक निर्णय फलन और वीटो''

बेंड्स जे. सी.– ''एक चुनाव प्रणाली की गणितीय व्युत्पत्ति'' इकानोमीररिका

बेंड्स जार्ज– ''संगति, विवेकशीलता और सामूहिक वरण'' रिवियु आफ इकानोमिक स्टडीज़

''संगति, विवेकशीलता और सामूहिक वरण के कुछ और परिणाम''

बेरगूइगनन और फ़ील्ड– ''गरीबी माप और गरीबी–विरूद्ध नीति''

ब्राम्स स्टीवेन– गेम थियूरी एंड पालिटिक्स, ''गेम सिद्धांत और राजनीति'', न्यूयार्क

ब्रेयर फ्राइरिक– ''उदार विरोधाभास, विषयों और क्षेत्र प्रतिबन्धों पर निर्णय लेना''

बुकानेन, जेसी और क्लाइम्ट द्वारा–शोध प्रबन्ध पर टिप्पणियां''

ब्रयर फ्रइरिक और गार्डनेर राय–''उदार विरोधाभास, गेम संतुलन और गिब्बर्ड इष्टतम''

ब्राउन डोनल्ड– ''ऐरो की समस्या का अनुमानित हल'' जर्नल आफ इकानोमिक थियूरी

''विकल्पों के सीमित सेट पर अचक्रीय समूहन''–

बुकानेन जेम्स– ''सामाजिक वरण, प्रजातंत्र और मुक्त बाज़ार''

''मतदान और बाजार में वैयक्तिक पसन्द''

आजादी, बाजार और राज्य, ब्रिघटन, यूके

''एक पेरेटो इच्छास्वातन्त्रवादी के असंभवता के बारे में सेन के तथा कथित सबूत में एक अस्पष्टता''

बुकानेन जम्स और टुलाक गोंडन–सहमति का कैल्कूलैस।

कैम्पबेल डोनल्ड– ''लोकतांत्रिक तरजीह फलन''

साम्या, दक्षता और सामाजिक वरण ऑक्सफोर्ड

कैम्पबेल डोनल्ड और केलीजैरी– सामाजिक वरण में संभवता–असंभवता सीमारेखा

कैपलिन एंडरियू और नेलबफ बेरी– ''64: बहुमत शासन पर''–इकोनोमीटरिका

–''समूहन और सामाजिक वरणः एक माध्य वोटर प्रमेय''–इकानोमीटरिका

कार्टर आईयान– अमर्त्य सेन की रचना में आजादी की संकल्पनाः एक वैकल्पिक विश्लेषण जो आजादी के स्वतंत्र मान के अनुरूप है''।

केसीनीलियोनार्डो एंड बइनेट्टी आयाकोप– सार्वजनिक परियोजना मूल्यांकन, पर्यावरण और सेन का सिद्धांत

चक्रवर्ती, सत्य– नैतिक सामाजिक, इन्डेक्स नम्बर्स, बर्लिन।

चिचिलनीस्की, ग्रेशिया –''मूल जरूरतें और वैश्विक माडल''

पेरेटो शर्त और तानाशाह के अस्तित्व की स्थान विज्ञान तुल्यता

–सामाजिक समूहन नियम और निरन्तरता''

चिचिलनीस्की और हील जैफरी– ''सामाजिक वरण विरोधाभास के सामधान के लिए जरूरी और पर्याप्त स्थितियां''

कोएल एन्सले– ''अत्यधिक महिला मर्भ्यता और लिंगों का बकायाः गुमशुदा महिलाओं की संख्या का एक अनुमान''

कोहेन जी. ए.– सामतावादी न्याय के प्रचनन पर

कल्याण, माल और क्षमताओं पर, किसी की समता?

कोल्स जैफरी और हैम्मण्ड, पीटर जे– ''उत्तरजीविता के बिना वालरेसियन सन्तुलन अस्तित्व, दक्षता और उपचारक नीति'' आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस आक्सफोर्ड

कंडोरसेट, माक्वीन

कोनिया, जियोवानी आंदरे– ''अस्सी के दशक में लैटिन अमेरिका में गरीबीः विस्तार, कारण और संभावति उपचार''

कौलहन और मोंगिन फिलिप – ''सामाजिकवरण सिद्धांत वान न्यूमान मोरजेंस्टर्न उपयोगिताओ के मामले में''

कोवेल फ्रैंक असमानता को मापना क्रोकर डेविड ''कार्यकरना औश्र क्षमताः सेन और नुस्साबाउम की विकास नीति''

डागुम कामीलों और जेन्गा मिशेल ''आय और धन वितरण, असमानता और गरीबी'', बर्लिन

डास गुप्ता पार्थ, हैम्पण्ड पीटर और मस्कन एरिके ''सामाजिक वरण नियमों का क्रियान्वयन''

दास गुप्ता पार्थ, सेन, अमर्त्यय और स्टारैट डेविड ''असमानता को मापने पर नोट''

डी एस्प्रीमेंट कलाड ''सामाजिक कल्याण क्रमण पर स्वयं सिद्ध''

डीएस्प्रीमोंट क्लाड और वीवर्सलूईस ''सामूहिक वरण की साम्या ओर सूचनात्मक आधार''

डी एस्प्रीमेंट क्लाड और मोंगिन फिलिप ''हरसान्यी के समूहन प्रमेय का एक कल्याणकारी रूपांतर''

डेविडसन डोनल्ड ''अन्तः वेयेक्तिक हितों का अनुमान लगाना''

डेविस औटो, डी ग्रूट, मोरिस एच और हीनिक मेलविन ''सामाजिक पसन्द क्रमण और बहुमत का शासन'' इकानोमीटरिका।

डीटन एनगस ''विकास नीति का माइक्राइकानो मीटरिक विश्लेषणः घरेलू सर्वेक्षण से एक रिपोर्ट''

डीटन अनगस और म्यूएल बाउसेर जॉन ''अर्थशास्त्र और उपभोक्ता का व्यवहार ''बच्चा लागते मापने पर : गरीब देशों पर लागू करते हुए जनर्ल ऑफ पोलीटि कल इकानोमी।

डेबरजत ''सामान्यकृत मतदान विरोधाभसों को निर्माण करने पर''

''स्शवर्टज के नियम पर'' जनर्ल ऑफ इकांनोमिक थियूरी।

''जैसे गेम बनती है अधित्याग, प्रभावकारिता और अधिकार इकानोमीका।

डी जेसी, एन्थम और क्लीमर हाईमुट ''मेरेशियन उदारवादी, उसकी आजादी और संविदाएं

डेनीकोलोविनसेनजो ''स्वतंत्र सामाजिक वरण अनुरूपताएं तानाशाही होती हैं'' इकोनोमिक पत्र

डेसाई मेघानन्द ''गरीबी, अकाल और आर्थिक विकास

डेसशैम्पस, राबर्ट और गीवर्स लूइस ''लेक्सीमीन और उपयोगिता नियम : एक संयुक्त लेखन–वर्णन

डाजसन सीएल– हैबडोमाडल परिषद के चुनावों के संबंध थे तथ्य, आंकडे और कल्पनाएं, क्लेरेंडन न्यासियों का प्रस्ताव ओर पार्कों को क्रिकेट ग्राउंडों में तबदील करना, ऑक्सफोर्ड, पारकर संसदीय प्रतिनिधित्व के विद्धांत– लंडन

ड्रेजजीन और अमर्त्य सेन– ''भूख और जनता की कार्रवाई – आक्सफोर्ड – आर्थिक विकास और सामाजिक अवसर, दिल्ली, न्यूयार्क

भूख का राजनीतिक विकास ऑक्सफोर्ड

भारतीय विकासः चुने हुए क्षेत्रीय संदर्भ –

डीसूजा फ्रांसेस : खामोशी से भूखे मरनाः अकाल और सेंसरशिप पर एक रपट, दिल्ली, न्यूयार्क

दत्ताभास्कर : ''लगातार वोटिंग प्रक्रियाओं की संभावना पर''

''उपयुक्त यंत्रावली और नैश क्रियान्वयन''

दत्ता भास्कर और पट्टनायक प्रशान्त के. ''शानदार लगातार मतदान प्रणाली पर''

डवोरकिन रोनल्ड ''समानता क्या है? भाग 1, क्लयाण की समानता और समानता क्या है? भाग 2, भाग 2 संसाधनों की समानता''

एजवर्थ फ्रांसिस : गणितीय भौतिकीः गणित का प्रयोग नैतिक विज्ञान पर करने पर एक निबंध, लंडन

एलस्टर जान और रियूमर जान– ''कल्याण की अन्तः वैयक्तिक तुलनाएं''

एक्सिन, राबर्ट और अबेरस– संक्रमण में कल्याणः स्वीडन में जीने के हालात का एक सर्वेक्षण

फेल्डमैन, एलेन– कल्याण अर्थशास्त्र और सामाजिक वरण सिद्धांत, बोस्टन

फेरेजान, जान और ग्रेथर डेविड–''विवेकपूर्ण सामाजिक निर्णय प्रक्रिया के एक वर्ग पर''

फाइन बेन– अन्तः वैयक्तिक समूहन और आंशिक तुल्यता पर एक नोट'' इकानोमीटरिका

फ़िशबर्न, पीटर–सामाजिक वरण का सिद्धांत

''सामूहिक समझदारी और एक सामान्यकृत असंभवता प्रमेय'' रिव्यु आफ इकानोमिक स्टडीज़

फ़िशर फ्रैंकलिन– ''आय वितरण, मान अनुमान और कल्याण'' त्रैमासिक जर्नल आफ इकानामिक्स

''घरेलू समता मानदंड और अन्तः वेयक्तिक तुलनाएं'' रिव्यु आफ इकोनोमिकक स्टडीज़

''घरेलू समता मानदंड–उत्तर''

फ़लयोबेसी, मार्क और गाएरटनेर वुल्फ़– गेम फार्म में ग्राहाता और संभाव्यता''

फोल्बेर नेंसी– बच्चों का खर्च कौन देता हैः बाधाओं का लिंग और ढांचा, न्यूयार्क

फोले डंकन– ''संसाधन आबंटन और सार्वजनिक क्षेत्र''

फ़ोस्टर जेम्स– ''आर्थिक दरिद्रता परः संकलित उपयों का एक सर्वेक्षण''

फ़ोस्टर जेम्स गरीर जोल और थोड़े बेके, एरिक– ''गरीबी अपघटित किए जाने वाले उपायों की एक श्रेणी''

फोस्टर जेम्स और अमर्त्य सेन– चौथाई शताब्दी के बाद आर्थिक असमानता पर

फोस्टर जेम्स एंड शोरोक्स एन्थनी– ''गरीबी क्रमण''

गायरटन वुल्फ– ''बहुमत निर्णय शासन के अधीन संक्राम्यता के लिए जरूरी और पर्याप्त शर्तो की तुलना और एक विश्लेषण''

''साभ्या और अन्याय प्रकार के बोर्डो नियम''

समाजिक वरण सिद्धांत में क्षेत्र की शर्तें

गायरटनेर वुल्फ और क्रूगेर लीरेन्ज– ''सैल्फ़सघोर्ट्रिग प्रेफ़रेसिस

''स्वतः सहायक तरजीहे और व्यक्तिगत अधिकारः एक पेरेशियन उदारवाद की संभावना''–इकोनोमिका

वैकल्पिक इच्छास्वातंत्रयवादी दावे और सेन का विरोधाभास'' सिद्धांत और निर्णय

गायरटने वुल्फ, पट्टनायक प्रशान और सूजूमूरा कोटाऐ–

''वैयक्तिक अधिकारों की पुनः जांच की गई''

गार्डफोर्स पीटर– अधिकार, गेम और सामाजिक वरण''

गेअनाकोपोलस जान– ''ऐरा की असंभवता प्रमेय के तीन संक्षिप्त सबूत''

गहरलीन विलियम कंडोरसेट – विरोधाभास

गीवर्स लूइस– ''अन्तर्राष्ट्रीय तुल्यता और सामाजिक कल्याण क्रमण पर''

घई, धर्म, अजीनुर्रखान; लीई और अल्फथान टीए.–
थ्वकास के संबंध में मूल जरूरत पहुंच

जिब्बार्ड अलान– ''मतदाता योजनाओं में छलकपटः एक सामान्य परिणाम''

''अन्तः वैयक्तिक तुलनाएं, पसन्द, अच्छा और एक जीवन का तात्विक पुरस्कार''

जूडिन राबर्ट– कल्याण के लिए करण, प्रिंस्टन यूर्निवर्सिटी प्रैस, प्रिंस्टन

ग्रानगालिया अलेना पीयूओ मेनो इक्वागालीऊंजा डी री सोर्स?
''अमर्त्य सेन के लिए दो प्रश्न''

ग्रेडमोंट जीन माइकल– मध्यवर्ती तरजीहें और बहुमत शासन''

गांट जेम्स पी.– ''सामाजिक सूचकों में विभेद घटाने की दो'' वाशिगंटन डीसी

ग्रीन जेरी एंड लेफ्फंट, जी जैकिस– ''सार्वजनिक निणर्य लेने में प्रोत्साहन''

ग्रेथर डेविड एम और प्लाट चार्ल्स–''गैर–द्विकर्मी सामाजिक वरणः एक असंभवता प्रमेय''

ग्रिफ्फ़ीन, कीथ और नाइट, जान–1990 के लिए मानव विकास और अन्तर्राष्ट्रीय विकास नीति

ग्रोवस, टेड और लेडयार्ड, जान– ''सरकारी माल का इष्टतम आबंटनः मुफ्त राइडर समस्या का हल''

पब्लिक गुडसः ए

गयुनीअर लानी– बहुमत का आतंकः प्रतिनिधि प्रजातंत्र में मूलभूत औचित्य, न्यूयार्क।

हैमलिन, एलान और पेटिट् फिलिप– ''एक अच्छी शासन व्यवस्थाः राज्य का नियामक विश्लेषण''

हैम्मण्ड पीटा जे– ''साम्या, ऐरो की शर्तें और राउल का विभेद सिद्धांत''

''आय वितरण के कल्याण अर्थशास्त्र और उपयोगिता की दोहरी अन्तः वैयक्तिक तुलना''

''उदारवाद, स्वतंत्र अधिकार और पेरेटो सिद्धांत'' कल्याण अर्थशास्त्र गेम्स फार्म बनाय सामाजिक वरण नियम

हेनस्सन, ब्रेनगट– वरण ढांचे और तरजीहे संबंध

समूह तरजीहें

''मतदान और समूह निर्णय फलन''

''समूह तरजीहों का अस्तित्व''

हक, महबूबल– ''मानव विकास पर परावर्तन'', न्यूयार्क

हैरिस बारबारा– दक्षिण एशिया में भूख का अन्तः परिवार वितरण

हरसानयी जान– ''मूलभूत कल्याण, व्यक्ति परक नैतिकता और उपयोगिता की अन्तः वैयक्तिक तुलनाएं''

हेयक फ्राइडरिक– आजादी का संविधान

हेलर वाल्टर पी, स्टार रोज और स्टारेट डेविड–''सामाजिक वरण और सार्वजनिक निर्णय लेना''

आनर ऑफ केन्नथ जे ऐरो, के सम्मान में निबन्ध

हुसैन इफ़्तखार– क्षमता विफलता के रूप में गरीबी

ह्यूमन राइस वॉच– अभाज्य मानवधिकारः उत्तरजीविता, जीवन निर्वाह और गरीबी के राजनीतिक और सिविल अधिकारों के बीच संबंध, न्यूयार्क।

हुरविक्ज़ लीओ, स्शमीडलेर डेविड और सोनेनशहीन हयूगो–सामाजिक लक्ष्य और सामाजिक संगठन, कैम्ब्रिज

आईनाडा केनीशी– ''साल बहुमत निर्णयशासन'' इकानोमोटरिका

''बहुमत शासन और विवेकशीलता''

जोरगेन्सन डेल– ''समस्त उपभोक्ता व्यवहार और सामाजिक कल्याण मापना'' इकानोमीटरिका

जोगेन्सन डेल; लाऊ लारेंस और स्टोकर थामस–''ठीक हमले के अधीन कल्याण तुलना''

काकवानी नानक– ''कल्याण उपायः अर्न्तराष्ट्रीय तुलना में''

''गरीबी मापने में मामलें''

कालाई एहूड और मुल्लर ई–गैर तानाशाही सामाजिक कल्याण कार्यों और बिना कपट मतदान नियमों को स्वीकार करने वाले क्षेत्रों का उल्लेख।

कानबूर रवि– ''असमानता और गरीबी का माप और अपघटन''

''बच्चे और अन्तः गृह असमानताः एक सैद्धांतिक विश्लेषण''

कानबूर रवि और हडाड लारेंस–अन्त गृह असमानता कितनी गम्भीर होती है? इकानोमिक जर्नल

कानगेर स्टिंग– ''मानवधिकार प्राप्त करने पर''

कैप्टीयन ऐरी और वान प्राग, बरनार्ड–''परिवार के बराबर स्केल बनाने के लिए एक नई पहुंच''

कैली जेरी– ''अनियमितताएं, वोटरों की संख्या और विकल्पों की संख्या''

''मतदान सिद्धांत में जरूरत का सिद्धांत''

ऐरा का अंसभव प्रमेय

सामाजिक वरण सिद्धांत :एक परिचय

कैसली डेविड– ''पेरेटो सिद्धांत के बिना अचक्रीय वरण''

पेरेटो प्रिंसिपल– ''सामाजिक निणर्य फलन का ढांचा''

किरमान एलान पी और सोंडरमान डीटर–ऐरो प्रमेय, बहुत से एजेन्ट और अदृश्य तानाशाह''

कलेसन स्टीफन– ''गुमशुदा माहिलाओं पर फिर विचार किया गया''

क्लाइम्ट, हार्टमुट– ''दास पैराडाक्सिस डेस लिब्रिलइजमुस इआइन इनीफूहरंग''

नाइट फ्रैंक– ''आजादी और सुधार–अर्थशास्त्र और सामाजिक दशर्न में निबन्ध''

कोल्म सर्ज–क्रिस्टोफ़ी– ''सामाजिक न्याय का इष्टतम उत्पादन''

काईंज जोसी़लीन और अमत्य सेन– ''भारतीय नारीः कल्याण और उत्तर जीवित'' कैमब्रिज।

लैफ्फेट जीन जैक्विस– तरजीहों का समूहन और प्रकटाव

लैफ्फेट जीन जैक्विस और मस्कन एरिस– ''प्रोत्साहनों का सिद्धांतः एक विहंगम दृष्टि''

ली ब्रेटन, माइकल और वेमार्क जान– ''एन इंट्रोडक्शन टु एरोवियन–''आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र में सामाजिक कल्याण कार्य,''

लेवी इसाक हार्ड याचसिस कैम्बिज

लेविन जो नाथन और नेलबफ़बैरी–''वोट गिनने की योजनाओं का परिचय''

लिटिल आई आन– कल्याण अर्थ व्यवस्थाओं का आलोचक दूसरा संस्कारण आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस।

मजुमदार तपस– ''सामाजिक कल्याण के लिए ऐरा के प्रतिपादनों पर एक टिप्पणी।

''सामूहिक वरण का अर्मत्यसेन का बीजगणिता

मर्शल अलफ़र्ड– अर्थशास्त्र के सिद्धांत, लंडन

पार्टी नेट्टी एनराइका चियापेरो– ''फ़ज्जी सेट सिद्धांत द्वारा कल्याण और गरीबी के मूल्यांकन की नई पहुंच''

सेन की पहुंच के आधार पर जीवन स्तर मूल्यांकन–कुछ सुव्यवस्थित सुझाव''

मैस कोलक, एन्डरीयू और सोनेनशहीन हयूगों –सामूहिक निर्णयों के लिए सामान्य संभावता प्रमेय''

मस्कन ऐरिक– ''प्रतिबंधित क्षेत्र में सामाजिक कल्याण कार्य''

''नीति सबूत और सामाजिक कल्याण कार्य जब तरजीहें प्रतिबंधित हैं''

''उपयोगितावाद पर एक प्रमेय''

''सामाजिक वरण की विवक्षाओं से अनभिज्ञता के अधीन निर्णय लेना''

''नैश सन्तुलन में क्रियान्वयन का सिद्धांतः एक सर्वेक्षण''

सामाजिक लक्ष्य और सामाजिक संगठनः दूलीशा पाजनेर की भाद में निबन्ध

''बहुमत शासन, सामाजिक कल्याण कार्य और गेम फार्म''

मस्कन ऐरिक और स्त्रोस्ट्रामटोमस– ''क्रियान्वयन सिद्धांत''

मस्टूमोटोयासूमी– ''गैर–द्विधारी सामाजिक वरणः प्रकट की गई तरजीहों की व्याख्या''

मैकलवे/चर्डडी– ''औपचारिक वोटिंग माडलों में वैश्विक अकर्मकता के लिए सामान्य शर्तें''

मैक्लीन आईआन– ''बोर्डा औश्र कंडोरसेट सिद्धांतः तीन मध्ययुगीन अनुप्रयोग'' सामाजिक वरण और कल्याण

पिलज्ञान स्टूअर– ''आजादी पर'', लंडन चार्कर 1859

मीरलीस जेम्स– ''उपयोगितावाद के आर्थिक प्रयोग''

बरनार्ड– ''सामाजिक वरण के सिद्धांत में दोहरापन''

मोनजारडेट– ''डूएल्टी इन दि थियूरी आफ सोशिल चायास''

मौरिस मौरिस द्वी– ''दुनिया भर के गरीबों की स्थिति को मापना'' आक्सफोर्ड परगामन प्रैस

माउलिन हरवे– सामाजिक वरण की नीति, एम्सटरडम–नार्थ हालैंड को–आपरेटिव माइक्रो इकानोमिक्स–प्रिंसटन।

माउलिन हरवे और थापास विलिमय– ''संसाधन आबंटन समस्या का स्वयंसिद्ध विश्लेषण''

म्यूलैर डेनिसी पब्लिक चायस प्प कैब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस–''प्रदत और उदार अधिकार''

''अवसरों के मूल्यांकन के लिए बहुपसन्द पहुंच पर'' सामाजिक वरण और कल्याण 1999

निकलसन माइकल– ''समिति के निर्णयों में वोटिंग विरोधाभास के लिए शर्तें''

नाज़िक राबर्ट–अर्नाकी स्टेट एंड यूटोपिया, न्यूयार्क

नुसबाउम मार्था– ''स्वरूप, फलन और क्षमताः राजनीतिक वितरण पर अरस्तू''

नुसबाउप मार्थो और ग्लोवर जानथन– महिलाएं, संस्कृति और विकासः एक अध्ययन मानव क्षमताओं का

नुसबाउम मार्था और अर्मत्य सेन– जीवन की किस्म

ओस्मानी सिद्दीकी– ''आर्थिक समानता और समूह कल्याण''

अकाल के प्रति हक की पहुंचः एक मूल्यांकन

पार्क रार्बट– ''पाथ आजादी में आगे परिणाम, आजादी, लोक पसन्द, अर्धस्कर्मकता और सामाजिक वरण''

स्थिर पसन्दों के लिए एक असंभवता प्रमेय– एक अधिनायकीय बर्गसन–सेम्युलसन कल्याण कार्य

पट्टनायाक प्रशांत के– मतदान और सामूहिक वरण लंडन

''गम्भीर मतदान स्थितियों के लिए स्थिरता पर''–नीति औश्र समूह वरण एम्सटाडम

दि लिबरल पैराडाक्स– उदार विरोधाभासः कुछ व्याख्याएं जब अधिकारों को गेम रूपों के रूप में बताया गया है।

''कुछ वैयक्तिक अधिकारों की माडलिंग पर, कुछ विचारात्मक विषय''

पट्टनायक प्रशांत और सैलेस मौरिस– सामाजिक और कल्याण

पट्टनायक प्रशांत और सेनगुप्ता– सकर्मक और अर्धकर्मक बहुमत निर्णयों के लिए शर्तें

''सामूहिक निर्णय फलनों की एक श्रेणी की प्रतिबंधित पसन्दों और नीति परक सबूत''

पाजनीर आलीशा और स्शमीडलेर डेविड– ''उपयुक्तता की संकल्पना में एक कठिनाई''

पेलेग बेजालेल– ''समरूप मतदान प्रणालियां'' ''समितियों में मतदान का गेम सैद्धांतिक विश्लेषण''

फेलपस एडमंड– आर्थिक न्याय

पीगाऊ आर्थर– कल्याण का अर्थशास्त्र, लंडन

प्लाट चार्ल्स– ''सन्तुलन की एक धारणा और बहुमत शासन के अधीन इसकी संभावना''

''पथ स्वतंत्रता, समझदारी और सामाजिक वरण''

''स्वयंसिद्ध सामाजिक वरण सिद्धांतः एक विहंगमदृष्टि और व्याख्या''

पोलोक रार्बट– ''कल्याण तुलनाएं और स्थिति तुलनाएं''

पोलोक रार्बट और वेल्स रेरीनसी– ''कल्याण तुलनाएं और तुल्यता माप''–अमेरिकन इकानोमिक रिव्यु

रे, डौगलेस– ''राजनीतिक पार्टी प्रतिस्पर्धा नियंत्रिक करने के लिए क्षेत्र महत्व का प्रयोग'' जर्नल आफ इकानोमिक पर्सपेक्टिव, विंटर

रंगाराजन– अर्थशास्त्र, नई दिल्ली भरत पेन्गुइन बुक्स

रेवेनियन माटर्न– मार्किट्स एंड फमिन्स–आक्फेडि यूनिवर्सिटी प्रैस, आक्सफोर्ड पावरटी कम्पैरिजन्स, चूर, स्विटजरलैंड

समस्त प्रधातों के लिए अतिसंवेदनशीलताः बंगलादेश और इंडोनेशिय में बदलती किस्मतें कौशक बासू, प्रशान्त पट्टनायक और कोटोर मूजूमूरा के चायस, वैल्फेयर एंड डिवेल्पमेन्ट में

राऊल जॉन ए थियूरी आफ जस्टिस हारवर्ड यूनिवर्सिटी कैम्ब्रिज

रज़नी शाहरशौब– ''अत्यधिक महिला मर्त्यताः महिला दमन का सूचक? दक्षिण–पूर्व इरान से ग्राम–स्तर साक्ष्य पर एक नोट ड्राइंग

रेडक्रास और क्रेसेन्ट सोसायटियां का अन्तर्राष्ट्रीय संघ– विश्व तबाही रिर्पोट 1994

रीले जानथन–उदार उपयोगिवादः जे एस, मिल का दर्शन और सामाजिक वरण सिद्धांत कैक्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, कैम्ब्रिज

राबिन्लायोनल– ''उपयोगिता की अन्तः वैयक्ति तुलनाएं–एक टिप्पणी'' इकानोमिक जर्नल

राबट्स केविन– ''संभवता थियूरम अन्तः वैयक्तिक तुलनात्मक कल्याण स्तरों सहित'' रीवियु ऑफ इकोनोमिक स्टडीज़

''मूल्यवरण विचार या विचारों के अनुसार मानः दोहरी समाकलन समस्या'' कौशक बासू, प्रशान्त पट्टनायक और कोटारो सूजूमूरा

रोयमर जान– शोषण और वर्ग का एक सामान्य सिद्धांत–हारवर्ड यूनिवर्सिटी कैम्ब्रिज

बांटे जाने वाले न्याय के सिद्धांत

रोथ्सचाइल्ड माइकल और स्टिगलीज़ जोज़फ–''असमानता के माप पर कुंछ और परिणाम'' जर्नल आफ इकानोमिक स्थियूरी

राउली चार्ल्स– स्वतंत्रता और राज्य–एलडाशाट, चूके

सैलेस मौरिस– ''पेरेटो सकर्मकता के साथ समूह निर्णय नियमों के लिए एक सामान्य संभावना सिद्धांत''–जर्नल आफ इकानोमिक थियूरी

सैम्यूल सन पाल– आर्थिक विश्लेषण की बुनियादें–कैम्ब्रिज

सट्टेरथवेट मार्क– ''नीति सबूत और एंरोकी शर्तेः मतदान प्रक्रिया और सामाजिक वरण फलनों के लिए अस्तित्व और अनुरूपता प्रमेय''

स्शमीडलेर डेविड और सोनेनशीहीन हयूगा– ''नीति सबूत सामाजिक वरण फलन की संभावना पर गिब्बर्ड–स्ट्टेरथवेट प्रमेय के दो सबूत''–एचडब्ल्यू गोटिंगेर और लीनफेलर

स्कोफील्ड नार्मन– ''बहुमत शासन की सामान्य अस्थिरता''

रिव्यु आफ इकानोमिक स्टडीज़

बोस्टन– सामूहिक निर्णय लेनाः सामाजिक वरण और राजनीतिक अर्थव्यवस्था

स्शोकअर्ट एरिक और वान ऊटेजेय– ''बेलनियन बेरोजगारों पर अनुप्रयोजित जीवन स्तर की सेन की संकल्पना''

स्शवार्टन थामस– ''युक्तिमूलक नीति मूल्याकंन की संभावना पर''

थियूरी एंड डिसियन, अक्तूबर 1970

दि लॉजिक आफ कुलैक्टिव चायस

आक्सफोर्ड– ''रैशनेलेटी एंड दि मिथ आफ मैक्सीमम'' जायलैस इकानोमी

सीडल क्रिस्चीयन– ''उदार मानों पर''

–''गरीबी मापनाः एक सर्वेक्षण''

–सार्वजनिक अर्थशास्त्र में कल्याण और दक्षता बर्लिन

–फाउंडेशन एंड इम्पलीकेशन आफ राइट्स

–सामाजिक वरण की पुनः जांच भाग–2 न्यूयार्क

सेन अमर्त्य– ''बहुमत निर्णयों को तरजीह, वोट और सर्कमता''

रिव्यु आफ इकानोमिक स्टडीज़

–''बहुमत निर्णयों पर संभवता प्रमेय ''इकानोमीटरीका

–''प्रायः सकर्मता, विवेकपूर्ण वरण और सामूहिक निणर्य''–रिव्यु आफ इकानोमिक स्टडीज़

–सामूहिक वरण और सामाजिक कल्याण–सांफ्रांसिस्को

–''एक पेरेशियन उदारवादी की असंभावना''–जर्नल आफ पोलिटिकल इकॉनोमी

–''अन्य वैयक्तिक समूहन और आंशिक तुल्यता'' इकानोमीटरिका

–आर्थिक असमानता पर–आक्सफोर्ड

–''जीएनपी उपायों का पूरक करने के लिए मूल आय सूचकों के विकास पर'' यूएन इकॉनोमिक बुलेटिन

–''व्यवहार और पसन्द की संकल्पना– इकानोमीटरिका

–''वरण, क्रमण और मर्त्यता''

–''वास्तविक राष्ट्रीय आय ''रिव्यु आफ इकानोमिक स्टडीज़

–''गरीबी : माप के लिए एक वगीर्य पहुंच'' इकानोमीटरीका

–''आजादी, एकमतता और अधिकार'' इकानोमीटरीका

–''सामाजिक वरण सिद्धांत–पुनःपरीक्षण– इकानोमीटरीका

–''भुखमरी और अदलाबदली हक–एक सामान्य पहुंच और बड़े बंगाल अकाल के लिए इसका अनुप्रयोग

–''वजनों और बोलों परः सामाजिक कल्याणा विश्लेषण में सूचनात्मक बाधाएं''– इकानोमीटरीका

–''युक्तियुक्त मूर्खः आर्थिक सिद्धांत की व्यावहारिक बुनियाद की आलोचना''

–''वास्तविक आय तुलनाओं के कल्याण आधारः एक सर्वेक्षण'' जर्नल आफ इकानोमिक लिटरेवर

–''वैयक्तिक उपयोगिताएं और सार्वजनिक निर्णयः या कल्याण अर्थशास्त्र के साथ क्या बुराई है?'' इकानोमिक जर्नल

–''समानता किसकी?''

– गरीबी और अकालः हक और वचन पर एक निबन्ध–आक्सफोर्ड

–''वरण, कल्याण और माप आक्सफोर्ड ब्लैकवेल

– ''राइट्स एंड एजेन्सी''

–''आजादी और सामाजिक वरण'' जर्नल आफ फ़िलासीफ़ी

– ''गरीब, अपेक्षाकृत कहते हुए'' आक्फोर्ड इकानोमिक पेपर

– संसाधन, मान और विकास कैम्ब्रिज–हावर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस

– पण्य और योग्यगताएं– एफाटाडय

–''कल्याण ऐजेन्सी और आजादी–जर्नल आफ फिलासोफी

–''सामाजिक वरण सिद्धांत– हैंडबुक आफ मैथीमेटीकल इकानोमिक्स, एम्सटाडम

–''सूचना और नियामक वरण की स्थिरता''

–''लिंग और सहकारी विवाद''–न्यूयार्क

–''असमानता पुनः जांच की गई, कैम्ब्रिज

–''न्यूनतम आजादी''–इकानोमिका

–''गुमशुदा महिलाएं''–ब्रिटिश मैडिकल जर्नल

–''वरण की भीतरी संगति''–इकानोमीटरिका

–''योग्यता और कल्याण''–दि क्वालिटी आफ लाइफ, ऑक्सफोर्ड

–''स्थितीय तटस्थता''– फिलासोफी एंड पब्लिक अफ़ेयर्स

–''कल्याण, योग्यता और सार्वजनिक नीति''

–''समझदारी और सामाजिक वरण''–अमेरिकन इकानोमिक रिव्यु

—''पर्यावरणीय मूल्यांकन और सामाजिक वरणः आकस्मिक मूल्यांकन और बाजार अनुरूपता'' जेपेनीज़ इकानोमिक रिव्यु

—''अधिकारः प्रतिपादन और परिणाम

—''आजादी, योग्तया और सार्वजनिक कार्रवाईः एक अनुक्रिया''।

—''अधिकतम बनाना और वरण का कार्य'' इकानोमीटरिका

—''सामाजिक वरण के रूप में वैयक्तिक पसन्द''

—''आर्थिक असमानता पर—ऑक्सफोर्ड

—''आजादी के रूप में विकास

— आजादी, समझदारी और सामाजिक वरणः ऐरो लैक्चर और अन्य निबन्ध

सेन अमर्त्य और पट्टनायक प्रशांत—''बहुमत निर्णय के अन्तर्गत युक्तियुक्त वरण के लिए जरूरी और पर्याप्त शर्ते''

जर्नल आफ इकानोमिक थियूरी

सेन गुप्ता पमीभय— ''सामाजिक निर्णयफलनों के असम्बद्ध विकल्पों और नीति सबूत की एकस्वरता और आजादी''—रिव्यु आफ इकानोमिक स्टडीज़

—''नीतिपरक मतदान के सिद्धांत में जानकारी अनुमान''—इकानोमिटरिका

शोरक्स एन्थनी— ''आजादी उपसमूहों द्वारा असमानता अपघटन—इकानोमीटरिका

—''सेन गरीबी इंडेक्स का पुनः देखना''

स्लेसनीक डेनियेल— ''कल्याण मापने के लिए अनुभवसिद्ध पहुंचे—जर्नल आफ इकानोमिक लिटरेचर

स्मिथ आदम— ''राष्ट्रों की धन सम्पदा की एक जांच, लंडन

सोलो राबर्ट— ''एक सामाजिक समस्या के रूप में व्यापक बेरोजगारी''—आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस

स्टारैड डेविड— ''सार्वजनिक अर्थशास्त्र की बुनियादें—कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस

स्टीना हिलील— ''अधिकारों को उनका स्थान दिलानाः एक मूल्यांकन

स्टीवर्ट फ्रांसिस— मूलभूत जरूरतें पूरी करने की योजनाः मैक्येलिन

स्ट्रासनीक स्टीफ़न— ''सामाजिक वरण और राडल के विभेद सिद्धांत की व्यत्पति''—जर्नल आफ फिलासोफी

स्ट्रीटन पाल— ''मूलभूत जरूरतेः कुछ हल न हुए प्रश्न'' बर्ल्ड डिवेल्पमेंट

स्ट्रीटन पाल— पहली बात पहलेः विकासशील देशों में मूल जरूरते पूरी करना आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस लंडन

सुजेन राबर्ट— सार्वजनिक वरण की राजनीतिक अर्थव्यवस्था, न्यूयार्क

—''आजादी, पसन्द और वरण''—इकोनोमिक्स एंड फ़िलोसोफ़ी

—''कल्याण, संसाधन और योग्यताएंः आमर्त्यसेन द्वारा पुनः जांच की गई असमानता की समीक्षा''—जर्नल आफ इकानोमिक लिटरेचर

सुपेस पैटारिक— ग्रेडिंग सिद्धांत के कुछ औपचारिक माडल— सिन्थीस

सूजमूरा कोटारो— ''परिमेय वरण और प्रकटित तरजीहें—रिव्यु ऑफ इकानोमिक स्टडीज़

—''सामूहिक वरण के सिद्धांत पर टिप्पणी''—इकानोमिक

—''परिमेय वरण और सामूहिक निर्णय और सामाजिक कल्याण''—कैमब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस

—''प्रतिस्पर्धा, वचनबद्धता और कल्याण''—ऑक्सफोर्ड''
—''कल्याण, अधिकार और सामाजिक वरण प्रक्रियाः एक संदर्श''
—''विस्तारित तपदर्दी टाइप की अन्तः वैयक्तिक तुलनाएं और सामाजिक वरण की संभावना''
—''परिणाम, अवसर और प्रक्रियाएं''—सामाजिक वरण और कल्याण
स्वीडबर्ग पीटर— गरीबी और कुपोषण : सिद्धांत और माप
स्वेनस्सन गन्नर— ''सामाजिक न्याय और उचित वितरण—लुंड इकानोमिक स्टडीज़
—''पीढियों के बीच समता'' इकानोमिटरिका
टाइडमैन निकोलस— ''एक हस्तांतरणीय वोट'' जर्नल आफ इकानोमिक पर्सपेक्टिवस, विन्टर
टुल्लाक गॉडन— ''सामान्य संभावता प्रमेय की सामान्य असंगति''—त्रैमासिक जर्नल आफ इकानोमिक्स
—यू.ए.डी.पी—मानव विकास रिर्पोट—न्यूयार्क, आक्सफोड यूनिवर्सिटी प्रैस
वॉन हीस मार्टन— '''वैयक्तिक अधिकार और कानूनी वैधता''
वान पारीजस फिलिप— ''सब के लिए वास्तविक आजादीः क्या होगा यदि यह पूंजीवाद को उचित ठहराए—आक्सफोर्ड
वेरियन हाल— ''समता, हसद और दक्षता—जर्नल आफ इकानोमिक थियूरी
—''बांटे जाने वाला न्याय, कल्याण अर्थशास्त्र और न्याय का सिद्धांत'' फ़िलासोफी एंड पब्लिक अफेयर्स—स्प्रिंग
वांगा मेगान एक अफ्रीकी अकाल की कहानीः 20वी शताब्दी मालवी में लिंग और अकाल—कैमब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस
''बिकरी विलियम उपयोगिता, नीति और सामाजिक निर्णय नियम''
''वार्ड बैजामिन ''बहुमत मतदान और सार्वजनिक उपक्रम का वैकल्पिक रूप'' जुलियस में।